सरल शब्दरूपावली

(प्रथम खंड)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ।

सरल शब्दरूपावली

(प्रथम खंड)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ।

४।)
६)
।=)
४)
।।।)
।।)
१।।)
२।।)
५)

लहसुन-प्याज ...		२।।)
शहद [शहद के बारे में पूरी जानकारी के लिए]	,,	३)
तुलसी [दूसरा परिवर्द्धित संस्करण]	,,	८)
सोंठ [तीसरा परिवर्द्धित संस्करण	,,	१।।)
देहाती इलाज [दूसरा परिवर्द्धित संस्करण]	,,	१)
मिर्च [काली, सफेद, और लाल] दूसरा संस्करण	,,	१)
स्तूप निर्माणकला [सचित्र, सजिल्द]	श्री नारायणराव	३)
प्रमेह, श्वास, अर्शरोग		१।)
जल चिकित्सा	श्री देवराज	१।।)

पता—प्रकाशन मन्दिर, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

सरल शब्दरूपावली

[प्रथम खण्ड]
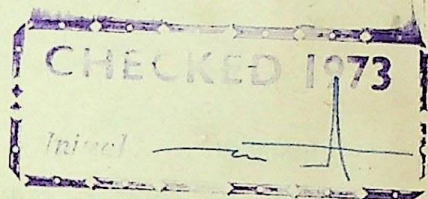
रचयिता

धर्मदेव वेदवाचस्पति

प्रकाशक
प्रकाशन मन्दिर, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

प्रकाशक—
मुख्याधिष्ठाता,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार

प्रथमावृत्तिः १००० प्रतियां माघ २००७

मूल्य दस आना

मुद्रक—
हरिवंश वेदालंकार
गुरुकुल मुद्रणालय,
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार।

विषय-सूचि

प्रथम खण्ड

प्राक्कथन

संस्कृत भाषा हमारे देश की प्राचीनतम भाषा है और इस समय बोल-चाल की भाषा नहीं रही। इस प्राचीनता के अतिरिक्त भाषा का गठन एवं प्रकृति भी कुछ इस प्रकार की है कि इस के अध्ययन में पर्याप्त कठिनता अनुभव होती है। यह कठिनता विशेषतः इस के संश्लेषणात्मक ढंग की भाषा होने के कारण है। जहां अर्वाचीन भाषाओं के संज्ञाओं तथा क्रियाओं के रूप थोड़े से नियमों के आधार पर सरलता से बनाये जा सकते हैं, वहां संस्कृत जैसी प्राचीन भाषाओं में यह बात नहीं। संज्ञाओं के साथ कारक सूचक प्रत्यय तथा धातुओं के साथ काल व प्रकार सूचक प्रत्यय मिलकर ऐसा रूपान्तर धारण कर लेते हैं कि उन का पहचानना कठिन हो जाता है और यह रूपान्तर भी सब संज्ञाओं व धातुओं में एक समान नहीं होता। व्याकरण के सूत्रों के आधार पर शब्दों व धातुओं की सिद्धि कर लेना सर्व साधारण के लिए सरल नहीं। अतः इन शब्दों व धातुओं को कण्ठस्थ करना अत्यधिक आवश्यक है। इसी दृष्टि से शब्दरूपावलि तथा धातु रूपावलि के अनेक ग्रन्थ समय २ पर प्रकाशित हुए हैं।

इस कृति की विशेषता।

इस शब्दरूपावलि को सरल तथा उपयोगी बनाने के लिये निम्न उपाय काम में लाये गये हैं—

[१] सरल व कठिन शब्दों को दो भागों में विभक्त कर दिया गया है। सरल शब्द प्रथम खण्ड में तथा कठिन या अपवाद रूप शब्द द्वितीय खण्ड में रखे गये हैं।

[२] अन्तिम वर्ण (अजन्त या हलन्त) के क्रम से शब्दों के रूप लिखते हुए नीचे हिन्दी में तत् सदृश शब्दों का परिगणन कर दिया गया है।

[३] केवल अजन्त या हलन्त होने के आधार पर ही विभाजन नहीं किया गया, प्रत्युत संख्यावाची, सर्वनामवाची, तथा विशेषणवाची प्रकरणों को अलग कर दिया गया है। जिस से विद्यार्थी को उसे समझने में कठिनता अनुभव न हो।

[४] स्थान-स्थान पर टिप्पणी में विशेष नियमों व समानताओं पर ध्यान दिलाया गया है।

[५] इन रूपों के गठन को समझने के लिये प्रारम्भ में सातों विभक्तियों के मूल प्रत्यय भी गिना दिये हैं।

[६] अनुवाद में प्रयोग की सुविधा के लिये आदि में कारकों के मुख्य मुख्य नियम और अन्त में विशेषणवाची शब्दों के—नियत लिंग न होने से जिनका एक निश्चित रूप

नहीं होता—भिन्न २ लिङ्गों में रूप बना लेने के नियम भी सरल विधि से दे दिये गए हैं।

[७] जब तक उन शब्दों के रूपों का विविध रूप से तुलनात्मक अध्ययन न हो तो वे दिल में बैठते नहीं। इस लिये समाप्ति पर प्रश्नमाला देकर इसे परमोपयोगी बनाने का प्रयत्न किया गया है।

प्रथम खण्ड में रूप निर्माण के नियमों को समझाते हुए प्राय: व्याकरण सूत्रों का निर्देश नहीं किया गया। द्वितीय खण्ड में कहीं २ विशेष सूत्र लिख दिये गए हैं। जिससे पाणिनी व्याकरण का अध्ययन करने वाले छात्रों को स्मरण करने में सहायता मिले। इस में अनुवादोपयोगी अन्य भी कई बातों को ध्यान में रखा गया है।

यदि इस से छात्रों को शब्दों के रूप स्मरण करने तथा समझने में कुछ विशेष सहायता मिली तो हम अपने प्रयत्न को सफल समझेंगे।

कण्ठस्थ करने से पूर्व कृपया शुद्ध्यशुद्धि पत्र (८०) के अनुसार शुद्ध कर लें।

गुरुकुल कांगड़ी
श्रद्धानन्द बलिदान दिवस
विक्रमीय सम्वत् २००७। } —धर्मदेव वेदवाचस्पति।

सरल शब्दरूपावली

शब्द विषयक सामान्य परिचय

संस्कृत शब्दों को मुख्यतया तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है—

१ नाम या सुबन्त, २ क्रिया या तिङन्त, ३ अव्यय।

(क) नाम में संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण वाची सभी शब्द सम्मिलित हैं।

जब वाक्यों में इनका प्रयोग किया जाता है तो लिङ्ग, वचन तथा विभक्ति के कारण उन का रूप परिवर्तित हो जाता है। मूल शब्द के अन्त में वचन या विभक्ति का बोध कराने के लिए कुछ प्रत्यय लगाये जाते हैं और इन्हें 'सुप्' कहते हैं। अत एव ऐसे शब्दों को 'सुबन्त' कहते हैं।

(ख) जिन शब्दों से किसी प्रकार के व्यापार का बोध होता है उन्हें क्रिया कहते हैं। काल वचन तथा पुरुष आदि का बोध कराने के लिए इन मूल क्रियाओं (धातुओं) के अन्त मे कुछ प्रत्यय जोड़ने पड़ते हैं, जिन्हें संक्षेप में

'तिङ्' कहते हैं। अतः ऐसे शब्द या पद 'तिङन्त' कहलाते हैं।

(ग) इन के अतिरिक्त कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो क्रिया विशेषण. संयोजक तथा विस्मयादिबोधक के रूप मे प्रयुक्त होते है। इन के रूप मे किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता। अतः इन्हें 'अव्यय' कहते हैं।

नाम या सुबन्त पद

संज्ञा इत्यादि का बोध कराने वाले सुवन्त शब्दों में लिंग, वचन तथा कारक (या विभक्ति) के कारण रूप परिवर्तित होता है। अतः इन्हें संक्षेप मे समझ लेना चाहिये।

लिङ्ग

संस्कृत भाषा में तीन लिङ्ग होते हैं—

१ पुँल्लिङ्ग। २. स्त्रीलिङ्ग। ३ नपुंसक लिङ्ग।

अंग्रेजी भाषा में सजीव पदार्थों के वाचक शब्द पुँल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग में और जड़पदार्थों के वाचक शब्द नपुंसक लिंग में प्रयुक्त होते हैं। परन्तु संस्कृत भाषा में लिंगनिर्णय करना सुगम नहीं। इस का ज्ञान तो संस्कृत का अभ्यास तथा कोष की सहायता से किया जा सकता है। संस्कृत में संज्ञावाची शब्दों के लिंग नियत हैं। सर्वनाम शब्द, युष्मद्, अस्मद्, कति को छोड़ कर, तीनों लिंगों में प्रयुक्त

होते हैं। परन्तु विशेषणों का कोई नियत लिंग नहीं। वे अपने विशेष्य के अनुसार लिङ्ग धारण करते हैं।

वचन

हिंन्दी एवं, आंग्लभाषा आदि प्रायः सभी अधुनिक भाषाओं से दो वचन प्रयुक्त होते हैं--एकवचन तथा बहुवचन। परन्तु संस्कृत में तीन वचन होते हैं—

१-एकवचन, २ द्विवचन, ३ बहुवचन।

नोट--संस्कृत में कुछ शब्द-(द्वि--उभ,अश्विन् आदि) केवल द्विवचन में ही प्रयुक्त होते हैं।

इसी प्रकार कुछ शब्द केवल बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं। यथाः—अप् (जल), कति, त्रि तथा इसके बाद के सख्या वाची शब्द।

कारक तथा विभक्ति

क्रिया की सिद्धि में जो किसी रूप से निमित्त बनते हैं, उन्हें 'कारक' कहते हैं। कारक छः हैं। वैयाकरण लोग सम्बन्ध को कारक नहीं मानते। क्योंकि उसका क्रिया पर कोई प्रभाव नहीं होता। इन कारकों को सूचित करने के लिए भिन्न भिन्न विभक्तियां होती हैं। ये विभक्तियां सात हैं। कारकों तथा विभक्तियों का विवरण तथा उनका हिन्दी चिन्ह नीचे दिया जाता है।

	कारक	विभक्ति	हिन्दी चिह्न
१	कर्ता	प्रथमा	× ने
२	कर्म	द्वितीया	× को
३	करण	तृतीया	ने, से, साथ
४	सम्प्रदान	चतुर्थी	के लिए
५	अपादान	पञ्चमी	से
×	सम्बन्ध	षष्ठी	का, के, की
६	अधिकरण	सप्तमी	में, पर,

१ कर्ता—क्रिया के करने वाले को कर्ता कहते हैं। कर्ता में (कर्तृ वाच्य में) प्रथमा विभक्ति होती है। यथा--

बालकः गच्छति = लड़का जाता है

बालकौ गच्छतः = दो लड़के जाते हैं।

बालकाः गच्छन्ति = लड़के जाते हैं।

२ कर्म—जो कुछ किया जाता है अर्थात देखा, खाया, पीया या दीया जाता है, उसे कर्म कहते हैं। कर्मकारक में (कर्तृ वाच्य में) द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा-

पुस्तकं पठति = पुस्तक (को) पढ़ता है

पुस्तके पठति = दो पुस्तकें पढ़ता है

पुस्तकानि पठति = पुस्तकें (को) पढ़ता है।

३ करण—कर्ता जिस साधन के द्वारा क्रिया की सिद्धि करता है, उसे करण कहते हैं। करण में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—

दण्डेन ताडयति—लाठी से पीटता है।

नेत्राभ्यां पश्यति—दो आंखों से देखता है।

शरैः हन्ति = बाणों से मारता है।

सम्प्रदान—जिसे कुछ दिया जाय या जिसके लिए कुछ कुछ किया जाय, उसे सम्प्रदान कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति प्रयुक्त होती है। यथा—

दीनाय ददाति – गरीब को (के लिए) देता है।

स्नानाय गच्छति – नहाने के लिए जाता है।

५ अपादान – जिससे किसी के पृथक् होने का बोध हो। अथवा जिससे भय, घृणा, लज्जा तथा उत्पत्ति हो या जिस से पढ़ा जाय उसे अपादान कारक कहते हैं। अपादान में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा-

वृक्षात् फलं पतति – पेड़ से फल गिरता है।

स सिंहात् बिभेति – वह शेर से डरता है।

पापात् जुगुप्सते – पाप से घृणा करता है।

स तस्मात् लज्जते – वह उससे शरमाता है।

दुग्धात् दधि जायते – दूध से दही बनता है।

गुरोः विद्यां पठति – गुरु से विद्या पढ़ता है।

६—दो नाम शब्दों का परस्पर सम्बन्ध प्रकट करने के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा–

रामस्य गृहम्=राम का घर

मम पुस्तकम्=मेरी पुस्तक

६ अधिकरण—जिस स्थान या समय में क्रिया की जाय उसे अधिकरण कहते हैं। इस अर्थ में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—

बने सिंह: गर्जति = बन में शेर गर्जता है।

प्रभाते पक्षिणः कूजन्ते = प्रातःकाल पक्षी चहचाते हैं।

इस प्रकार कारकों का मुख्य २ प्रयोग लिख दिया है। परन्तु इस का विस्तार व्याकरण के ग्रन्थों में मिल सकता है।

नोट—इस के अतिरिक्त सम्बोधन में भी शब्दों के रूप बनते हैं।

प्रकृति प्रत्यय भेद

संस्कृत में प्रयुक्त होने वाले नाम (सुबन्त) शब्द दो भागों में विभक्त किये जा सकते हैं—

१. अजन्त या स्वरान्त

२. हलन्त या व्यञ्जनान्त

भिन्न भिन्न विभक्तियों और वचनों में इन के रूप परिवर्तन होते समय निम्नलिखित प्रत्यय इन के साथ लगते हैं।

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा और सम्बोधन	सु (:)	औ	जस् (अः)
द्वितीया	अम्	औट् (औ)	शस् (अः)
तृतीया	टा (आ)	भ्याम्	भिस् (भिः)
चतुर्थी	ङे (ए)	भ्याम्	भ्यस् (भ्यः)

पञ्चमी	ङसि (अ:)	भ्याम्	भ्यस् (भ्य:)
षष्ठी	ङस् (अ:)	ओस् (ओ:)	आम्
सप्तमी	ङि (इ)	ओस् (ओ:)	सुप् (सु)

ये विभक्तियां 'सु' से प्रारम्भ होकर 'प्' पर समाप्त होती हैं। इस लिए इन के आदि और अन्त के अक्षर लेकर इन्हें 'सुप्' कहते हैं। इन प्रत्ययों के जोड़ने से बने शब्द को 'सुबन्त' कहते हैं। सु आदि प्रत्ययों के प्रारम्भिक रूप हैं। परन्तु जब इन्हें मूल शब्द के साथ जोड़ा जाता है तो इन में भिन्न भिन्न परिवर्तन हो जाते हैं। इस लिये इन शब्दों को कण्ठस्थ कर लेना अधिक आवश्यक है। इसी विचार से उक्त दोनों प्रकार के शब्दों में से मुख्य-मुख्य शब्दों के क्रमशः पुँल्लिङ्ग, स्त्री-लिङ्ग तथा नपुंसक लिङ्ग में रूप दिये जाते हैं।

प्रथम खण्ड

अजन्त पुँल्लिङ्ग शब्द-प्रकरण

१ अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दः 'बालक' (लड़का)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
बालकः	बालकौ	बालकाः	प्रथमा
बालकं	बालकौ	बालकान्	द्वितीया
बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः	तृतीया
बालकाय	बालकाभ्याम	बालकेभ्यः	चतुर्थी
बालकान्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः	पञ्चमी
बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्	षष्ठी
बालके	बालकयोः	बालकेषु	सप्तमी
हे बालक	हे बालकौ	हे बालकाः	सम्बोधनम्

नोट-- कर, नर, राम, पुरुष, अश्व, कुक्कुर, गज वानर, वृक्ष, , सर्प आदि प्रायः सभी अकारान्त शब्दो के रूप इसी प्रकार बनेंगे। जिन शब्दों में 'र' या 'ष' आता हो उन में तृतीया विभक्ति के एकवचन तथा षष्ठी के वहुवचन में विशेष नियमानुसार न को ण हो जाता है। यथा रामेण, रामाणाम् । अन्यत्र बालक की तरह रूप होंगे।

२. इकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द 'मुनि' (मुनि)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
मुनिः	मुनी	मुनयः	प्रथमा
मुनिम्	"	मुनीन्	द्वितीया
मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः	तृतीया
मुनये	"	मुनिभ्यः	चतुर्थी
मुनेः	"	"	पञ्चमी
मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्	षष्ठी
मुनौ	"	मुनिषु	सप्तमी
हे मुने	हे मुनी	हे मुनयः	सम्बोधनम्

शेष इकारान्त पुंलिंग शब्दों के रूप भी मुनि की भांति होते हैं। यथा—अग्नि, रवि, कवि, हरि, अरि, गिरि, ऋषि, अतिथि, भूपति, यति, मणि, असि। परन्तु जिन शब्दों में र या ष आता है उनके तृतीया के एक वचन तथा षष्ठी के बहुवचन में व्याकरण के नियमानुसार न को ण हो जाता है। यथा—हरिणा, हरीणाम्।

३. इकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द 'सखि' (मित्र)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
सखा	सखायौ	सखायः	प्रथमा
सखायम्	"	सखीन्	द्वितीया
सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः	तृतीया
सख्ये	"	सखिभ्यः	चतुर्थी

सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः	पञ्चमी
”	सख्योः	सखीनाम्	षष्ठी
सख्यौ	”	सखिषु	सप्तमी
हे सखे	हे सखायौ	हे सखायः	सम्बोधनम्

इकारान्त होते हुए भी सखि तथा पति शब्दों के रूपों में भिन्नता है। अत: इनके रूप पृथक् लिख दिये गए हैं।

४. इकरान्त पुँल्लिङ्ग शब्द 'पति' (स्वामी)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
पतिः	पती	पतयः	प्रथमा
पतिम्	”	पतीन्	द्वितीया
पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः	तृतीया
पत्ये	”	पतिभ्यः	चतुर्थी
पत्युः	”	”	पञ्चमी
पत्युः	पत्योः	पतीनाम्	षष्ठी
पत्यौ	”	पतिषु	सप्तमी
हे पते	हे पती	हे पतयः	सम्बोधनम्

नोट—परन्तु जिन शब्दों का पति के साथ समास हो —यथा भूपति, नरपति, यदुपति, धनपति इत्यादि—उनके रूप पति के समान न होकर मुनि शब्द के समान होंगे।

५. उकारान्त पुँल्लिङ्ग भानु शब्द 'भानु' (सूर्य)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
भानुः	भानू	भानवः	प्रथमा

भानुम्	"	भानून्	द्वितीया
भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः	तृतीया
भानवे	"	भानुभ्यः	चतुर्थी
भानोः	"	"	पञ्चमी
"	भान्वोः	भानूनाम्	षष्ठी
भानौ	"	भानुषु	सप्तमी
हे भानो	हे भानू	हे भानवः	सम्बोधनम्

प्रायः सभी उकारान्त शब्दों के रूप भानु शब्द के रूप के समान होते हैं। यथाः—साधु, इन्दु, पशु, वायु, शिशु, शत्रु, रिपु, विधु, तरु, मृत्यु, सूनु, गुरु, इषु इत्यादि।

६. ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द 'धातृ' (ब्रह्मा)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
धाता	धातारौ	धातारः	प्रथमा
धातारम्	"	धातॄन्	द्वितीया
धात्रा	धातृभ्याम्	धातृभिः	तृतीया
धात्रे	"	धातृभ्यः	चतुर्थी
धातुः	"	"	पञ्चमी
"	धात्रोः	धातॄणाम्	षष्ठी
धातरि	"	धातृषु	सप्तमी
हे धातः	हे धातारौ	हे धातारः	सम्बोधनम्

प्रायः सभी ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप धातृ शब्द

की तरह होते हैं। यथा—कर्तृ, वक्तृ, दातृ, श्रोतृ, जेतृ, सवितृ, होतृ इत्यादि। इन सब में तृन् व तृच् प्रत्यय है।

७. ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द 'पितृ' (पिता)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
पिता	पितरौ	पितरः	प्रथमा
पितरम्	,,	पितॄन्	द्वितीया
पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः	तृतीया
पित्रे	,,	पितृभ्यः	चतुर्थी
पितुः	,,	,,	पञ्चमी
,,	पित्रोः	पितॄणाम्	षष्ठी
पितरि	,,	पितृषु	सप्तमी
हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः	सम्बोधनम्

नोट—पितृ शब्द के प्रथमा, द्वितीया तथा सम्बोधन के रूप सामान्य ऋकारान्त शब्दों के रूपों से कुछ भिन्न होते हैं। इस लिए पितृ शब्द के रूप पृथक् लिख दिये हैं। शेष विभक्तियों के रूप धातृ शब्द के समान ही हैं।

मातृ तथा जामातृ शब्दों के रूप भी पितृ शब्द के समान जानने चाहियें।

८. ऐकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द 'रै' (धन)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
राः	रायौ	रायः	प्रथमा
रायम्	,,	,,	द्वितीया

राया	राभ्याम्	राभिः	तृतीया
राये	"	राभ्यः	चतुर्थी
रायः	"	"	पञ्चमी
"	रायोः	रायाम्	षष्ठी
रायि	"	रासु	सप्तमी
हे राः	हे रायौ	हे रायः	सम्बोधनम्

शेष ऐकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द भी इसी प्रकार जानो।

सामान्य नियम—ऐकारान्त शब्दों में सुप् प्रत्ययों के सम्बन्ध से विशेष परिवर्तन नहीं होता। केवल अजादि प्रत्यय (जिनका प्रथम अक्षर स्वर हो) परे होने पर ऐ को आय् (एचोऽयवायवः) हो जाता है तथा हलादि प्रत्यय (जिनके प्रारम्भ में व्यञ्जन अक्षर हो) परे होने पर ऐ को आ हो जाता है।

६. ओकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द 'गो' (बैल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
गौः	गावौ	गावः	प्रथमा
गां	गावौ	गाः	द्वितीया
गवा	गोभ्याम्	गोभिः	तृतीया
गवे	"	गोभ्यः	चतुर्थी
गोः	"	"	पञ्चमी
गोः	गवोः	गवाम	षष्ठी
गवि	"	गोषु	सप्तमी

हे गौः	हे गावौ	हे गावः	सम्बोधनम्

नोट—गौ शब्द गाय अर्थ में स्त्री लिंग वाची है। परन्तु स्त्री लिंग में भी इस के रूप इसी प्रकार बनते हैं।

१०. औकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द 'ग्लौ' (चन्द्रमा)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
ग्लौः	ग्लावौ	ग्लावः	प्रथमा
ग्लावम्	"	"	द्वितीया
ग्लावा	ग्लौभ्याम्	ग्लौभिः	तृतीया
ग्लावे	"	ग्लौभ्यः	चतुर्थी
ग्लावः	"	"	पञ्चमी
ग्लावः	ग्लावोः	ग्लावाम्	षष्ठी
ग्लावि	"	ग्लौषु	सप्तमी
हे ग्लौः	हे ग्लावौ	हे ग्लावः	सम्बोधनम्

नोट—औकारान्त शब्दों के पुँल्लिंग तथा स्त्रीलिंग में एक समान रूप बनते है। देखो नौशब्द (स्त्री लिंग)। सामान्य नियम—औकारान्त शब्दों में सुप् प्रत्यय परे होने पर कोई परिवर्तन नहीं होता। केवल अजादि प्रत्यय परे होने पर औ को आव् हो जाता है।

अजादि स्त्रीलिङ्ग प्रकरण

११. आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द लता (वेल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
लता	लते	लताः	प्रथमा
लतां	"	"	द्वितीया

लतया	लताभ्याम्	लताभिः	तृतीया
लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः	चतुर्थी
लतायाः	,,	,,	पञ्चमी
,,	लतयोः	लतानाम्	षष्ठी
लतायाम्	,,	लतासु	सप्तमी
हे लते	हे लते	हे लताः	सम्बोधनम्

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप प्रायः 'लता' के समान होते हैं। यथा—माला, शाला, कन्या, कथा, आज्ञा, शिला, बालिका, गंगा, यमुना, तूलिका, क्षमा, शोभा, छाया, विद्या, क्रीडा आदि।

नोट—अम्बा (माता) शब्द के रूप भी लता के समान ही होते हैं। केवल सम्बोधन के एक वचन में 'हे अम्ब' बनता है।

१२. इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'मति' (बुद्धि)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
मतिः	मती	मतयः	प्रथमा
मतिं	मती	मतीः	द्वितीया
मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः	तृतीया
मत्यै-मतये	,,	मतिभ्यः	चतुर्थी
मत्याः-मतेः	,,	,,	पञ्चमी
मत्याः-मतेः	मत्योः	मतीनाम्	षष्ठी

मत्याम्	मत्योः	मतिषु	सप्तमी
हे मते	हे मती	हे मतयः	सम्बोधनम्

ह्रस्व इकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप सामान्यतः 'मति' के समान होते हैं। जिनके अन्त में क्तिन् (ति) प्रत्यय होता है, वे तो निश्चित ही। उदाहरणार्थ— स्तुति, श्रुति, स्मृति, भक्ति, विपत्ति, सम्पत्ति, विभूति, नीति, गति, बुद्धि, मुक्ति, रीति, प्रकृति, रात्रि, विभक्ति, रुचि, भूमि, पंक्ति, हानि।

१३. ईकारान्त स्त्री लिङ्ग शब्द 'नदी' (नदी)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
नदी	नद्यौ	नद्यः	प्रथमा
नदीम्	"	नदीः	द्वितीया
नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः	तृतीया
नद्यै	"	नदीभ्यः	चतुर्थी
नद्याः	"	"	पञ्चमी
नद्याः	नद्योः	नदीनाम्	षष्ठी
नद्याम्	"	नदीषु	सप्तमी
हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः	सम्बोधनम्

सामान्यतः ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप नदी के समान होते हैं। यथा—देवी, नारी, कुमारी, पुत्री, पत्नी, पृथ्वी, रजनी पुरी, दासी, लेखनी, मसी, मेदिनी, जननी, सखी, भगिनी आदि।

१४. ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'धी' (बुद्धि)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
धीः	धियौ	धियः	प्रथमा
धियम्	"	"	द्वितीया
धिया	धीभ्यां	धीभिः	तृतीया
धियै-धिये	"	धीभ्यः	चतुर्थी
धियाः-धियः	"	"	पञ्चमी
धिया-धियः	धियोः	धीयाम,धीनाम्	षष्ठी
धियाम्-धियौ	"	धीषु	सप्तमी
हे धीः	हे धियौ	हे धियः	सम्बोधनम्

श्री (लक्ष्मी), भी (डर) ह्री (लज्जा) आदि शब्दों के रूप भी 'धी' के समान होते हैं। अर्थात् नदी आदि अन्य ईकारान्त शब्दों के समान प्रथमा के एकवचन में विसर्गों का लोप नहीं होता। और यण् (य) के स्थान पर इयङ् (इय्) हो जाता है।

१५. ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'स्त्री' (स्त्री)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः	प्रथमा
स्त्रियम्-स्त्रीम्	"	स्त्रियः-स्त्रीः	द्वितीया
स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः	तृतीया
स्त्रियै	"	स्त्रीभ्यः	चतुर्थी

स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः	पञ्चमी
स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्	षष्ठी
स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु	सप्तमी
हे स्त्रि	हे स्त्रियौ	हे स्त्रियः	सम्बोधनम्

१६. उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'धेनु' (गौ)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	बिभक्ति
धेनुः	धेनू	धेनवः	प्रथमा
धेनुम्	"	धेनूः	द्वितीया
धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः	तृतीया
धेन्वै-धेनवे	"	धेनुभ्यः	चतुर्थी
धेन्वाः-धेनोः	"	"	पञ्चमी
"-"	धेन्वोः	धेनूनाम्	षष्ठी
धेन्वाम्-धेनौ	"	धेनुषु	सप्तमी
हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः	सम्बोधनम्

इसी प्रकार रज्जु, तनु (शरीर), हनु (ठोडी), रेणु, चञ्चु आदि उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप होते हैं ।

१७. ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'वधू' (बहू)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
वधूः	वध्वौ	वध्वः	प्रथमा
वधूम्	"	वधूः	द्वितीया
वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः	तृतीया

वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः	चतुर्थी
वध्वाः	"	"	पञ्चमी
"	वध्वोः	वधूनाम्	षष्ठी
वध्वाम्	"	वधूषु	सप्तमी
हे वधु	हे वध्वौ	हे वध्वः	सम्बोधनम्

इसी प्रकार चमू (सेना), श्वश्रू (सास) कर्कन्धू (बेर) यवागू आदि शब्दों के रूप होते हैं।

१८. ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'भू' (पृथ्वी)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
भूः	भुवौ	भुवः	प्रथमा
भुवम्	"	"	द्वितीया
भुवा	भूभ्याम	भूभिः	तृतीया
भुवै-भुवे	"	भूभ्यः	चतुर्थी
भुवाः-भुवः	"	"	पञ्चमी
"-"	भुवोः	भुवाम्-भूनाम्	षष्ठी
भुवाम्-भुवि	"	भूषु	सप्तमी
हे भूः	हे भुवौ	हे भुवः	सम्बोधनम्

इसी प्रकार भ्रू (भौंह), सुभ्रू (सुन्दर भौंह वाली) आदि शब्दों के रूप भी होते हैं ।

१९. ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'स्वसृ' (बहिन)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः	प्रथमा
स्वसारम्	"	स्वसॄः	द्वितीया
स्वस्रा	स्वसृभ्यां	स्वसृभिः	तृतीया
स्वस्रे	"	स्वसृभ्यः	चतुर्थी
स्वसुः	"	"	पञ्चमी
"	स्वस्रोः	स्वसॄणाम्	षष्ठी
स्वसरि	"	स्वसृषु	सप्तमी
हे स्वसः	हे स्वसारौ	हे स्वसारः	सम्बोधनम्

परन्तु स्वसृ शब्द से भिन्न शेष ऋकारान्त शब्दों के रूप प्रथमा तथा द्वितीया विभक्ति में कुछ भिन्न होते हैं। देखो मातृ शब्द के रूप।

२०. ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'मातृ' (माता)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
माता	मातरौ	मातरः	प्रथमा
मातरम्	"	मातॄः	द्वितीया
	(शेष पितृ शब्द के समान)		
मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः	तृतीया
मात्रे	"	मातृभ्यः	चतुर्थी
मातुः	"	"	पञ्चमी

मातुः	मात्रोः	मातृणाम्	षष्ठी
मातरि	”	मातृषु	सप्तमी
हे मातः	हे मातरौ	हे मातरः	सम्बोधनम्

नोट—तृतीया से सप्तमी तक मातृ शब्द के रूप स्वसृ शब्द के समान होते हैं। केवल प्रथमा, द्वितीया में अन्तर है। दुहितृ (कन्या) ययातृ (देवरानी) ननान्दृ (ननद) शब्दों के रूप भी मातृ शब्द के समान जानो।

नोट—इन ऋकारान्त स्त्री लिंग शब्दों के रूप द्वितीया विभक्ति के वहुवचन के अतिरिक्त पुँल्लिङ्ग वाले पितृ शब्द के समान होते हैं।

२१. ओकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'गो' (गाय)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
गौः	गावौ	गावः	प्रथमा

इत्यादि सम्पूर्ण रूप पुँल्लिङ्ग 'गो' शब्द के समान हैं।

नोट—ओकारान्त पुँल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिंग शब्दों के रूप सर्वथा समान होते हैं।

२२. औकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'नौ' (नौका)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
नौः	नावौ	नावः	प्रथमा
नावम्	”	”	द्वितीया
नावा	नौभ्याम्	नौभिः	तृतीया

नावे	"	नौभ्यः	चतुर्थी
नावः	"	"	पञ्चमी
"	नावोः	नावाम्	षष्ठी
नावि	"	नौषु	सप्तमी
हे नौः	हे नावौ	हे नावः	सम्बोधनम्

नोट—(क) औकारान्त स्त्रीलिंग तथा पुँल्लिंग शब्दो के रूपों में कोई भेद नहीं होता। अत एव ग्लौ (पुँल्लिंग) तथा नौ (स्त्रीलिंग) के रूप सर्वथा एक समान है।

(ख) ओकारान्त तथा औकारान्त शब्दों में केवल इतना ही भेद है कि अजादि (जिनके प्रारम्भ में स्वर हों) प्रत्यय में 'ओ' के स्थान पर 'अव्' तथा 'औ' के स्थान पर 'आव्' हो जाता है। इसके अतिरिक्त ओकारान्त शब्दों में द्वितीया के (ए०, ब) में ओ के स्थान पर 'आ' हो जाता है (औतोऽम्शसोः)।

अजन्त नपुंसकलिङ्ग प्रकरण

२३. अकारान्त नपुँसकलिङ्ग शब्द 'वन' (जङ्गल)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
वनम्	वने	वनानि	प्रथमा
वनम्	"	वनानि	द्वितीया
शेष रूप अकारान्त पुँल्लिग के समान			
वनेन	वनाभ्यां	वनैः	तृतीया

वनाय	वनाभ्याम्	वनेभ्यः	चतुर्थी
वनात्	,,	,,	पञ्चमी
वनस्य	वनयोः	वनानाम्	षष्ठी
वने	,,	वनेषु	सप्तमी
हे वन	हे वने	हे वनानि	सम्बोधनम्

इसी प्रकार शेष अकारान्त नपुंसक लिंग शब्द जानो। यथा—फल, पुष्प, जल, पत्र, अरण्य, सलिल, भुवन, वन, पुस्तक, दुग्ध, पात्र, धन, सुख, दुःख, नगर, कमल, पाप, पुण्य, मुख, उदर, वस्त्र, नेत्र, कार्य, कमल, बल, वैर इत्यादि।

२४. इकारान्त नपुँसकलिङ्ग शब्द 'वारि' (जल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
वारि	वारिणी	वारीणि	प्रथमा
,,	,,	,,	द्वितीया
वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः	तृतीया
वारिणे	,,	वारिभ्यः	चतुर्थी
वारिणः	,,	,,	पञ्चमी
,,	वारिणोः	वारिणाम्	षष्ठी
वारिणि	,,	वारिषु	सप्तमी
हे वारे-वारि	हे वारिणी	हे वारीणि	सम्बोधनम्

इसी प्रकार शेष इकारान्त नपुँसकलिङ्ग शब्द जानो। यथा—

२५. इकारान्त नपुँसलिङ्ग शब्द 'दधि' (दही)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
दधि	दधिनी	दधीनि	प्रथमा
"	"	"	द्वितीया
दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः	तृतीया
दध्ने	"	दधिभ्यः	चतुर्थी
दध्नः	"	"	पञ्चमी
"	दध्नोः	दध्नाम्	षष्ठी
दध्नि-दधनि	"	दधिषु	सप्तमी
हे दधे-हे दधि	हे दधिनी	हे दधीनि	सम्बोधनम्

इसी प्रकार अस्थि, अक्षि तथा सक्थि (जांघ) शब्दों के रूप जानो। वारि शब्द से मोटे रूप में इतना ही भेद समझो कि तृतीया से बाद की अजादि विभक्तियों में 'इ' का लोप हो जाती है। [व्याकरण के नियमानुसार 'इ' को अन् हो कर उसके अ का लोप हो जाता है। सप्तमी के एक वचन में यह अ का लोप विकल्प से होता है।]

२६. उकारान्त नपुँकस लिङ्ग शब्द 'मधु' (शहद)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
मधु	मधुनी	मधूनि	प्रथमा
"	"	"	द्वितीया
मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः	तृतीया

मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः	चतुर्थी
मधुनः	”	”	पञ्चमी
”	मधुनोः	मधूनाम्	षष्ठी
मधुनि	”	मधुषु	सप्तमी
हे मधो-हे मधु	हे मधुनी	हे मधूनि	सम्बोधनम्

सामान्यतः उकारान्त नपुँसकलिंग शब्दों के रूप इसी प्रकार बनेंगे। यथा—अम्बु, वस्तु, अश्रु, वसु (धन), दारु, श्मश्रु, जतु, तथा जानु (घुटना) शब्द।

२७. ऋकारान्त नपुँसक शब्द 'धातृ' (धारण करने वाला)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
धातृ	धातृणी	धातॄणि	प्रथमा
”	”	”	द्वितीय
धातृणा	धातृभ्यां	धातृभिः	तृतीया
धातृणे	”	धातृभ्यः	चतुर्थी
धातृणः	”	”	पञ्चमी
”	धातृणोः	धातॄणाम्	षष्ठी
धातृणि	”	धातृषु	सप्तमी
हे धातृ	हे धातृणी	हे धातॄणि	सम्बोधनम्

नपुँसकलिंग में ऋकारान्त शब्द संज्ञावाची नहीं मिलते। अत एव हमने यहां एक विशेषण वाची शब्द के रूप उद्धृत किये हैं। परन्तु व्याकरण के नियमानुसार विशेषण वाची नपुँसकलिंग के शब्दों के रूप तृतीया से सप्तमी विभक्ति तक

के अजादि प्रत्यय परे होने पर दो-दो रूप बनने चाहिये। यहां सुगमता की दृष्टि से केवल एक-एक ही रूप लिखे हैं। पूरे रूप द्वितीय खण्ड में देखो।

अथ हलन्त पुँल्लिङ्ग प्रकरण

२८. चकारान्त पुँल्लिंग शब्द 'पयोमुच्' (बादल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
पयोमुक्-च्	पयोमुचौ	पयोमुचः	प्रथमा
पयोमुचम्	”	”	द्वितीया
पयोमुचा	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भिः	तृतीया
पयोमुचे	”	पयोमुग्भ्यः	चतुर्थी
पयोमुचः	”	”	पञ्चमी
”	पयोमुचोः	पयोमुचाम्	षष्ठी
पयोमुचि	”	पयोमुक्षु	सप्तमी
हे पयोमुक्-ग्	हे पयोमुचौ	हे पयोमुचः	सम्बोधनम्

इसी प्रकार सुवाच्, जलमुच् तथा सितत्वच् आदि चकारान्त शब्द समझो।

नियम—कुछ हलन्त शब्दों में (पुँल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिंग में) प्रत्यय जुड़ाने पर भी कोई परिवर्तन नहीं होता। यहां केवल हलादि प्रत्ययों (भिस्, भ्याम्, भ्यस्) के परे होने पर 'च्' के स्थान पर ग् तथा सु परे होने पर क् होजाता हैं।

इसी प्रकार अन्य धातुओं के नीचे भी नोट देखो।

२९. जकारान्त पुँलिङ्ग शब्द 'भिषज्' (वैद्य)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
भिषक्-ग्	भिषजौ	भिषजः	प्रथमा
भिषजम्	"	"	द्वितीया
भिषजा	भिषग्भ्यां	भिषग्भिः	तृतीया
भिषजे	"	भिषग्भ्यः	चतुर्थी
भिषजः	"	"	पञ्चमी
"	भिषजोः	भिषजाम्	षष्ठी
भिषजि	"	भिषक्षु	सप्तमी
हे भिषक्-ग्	हे भिषजौ	हे भिषजः	सम्बोधनम्

इसीप्रकार जकारान्त पुँल्लिग शब्द-ऋत्विज्, हुतभुज्, वणिज्, रसभाज्, आदि शब्द जानो।

नोट—जकारान्त शब्दों में भिस्, भ्याम्, भ्यस् परे होने पर 'ज्' के स्थान पर 'ग्' तथा सु परे होने पर 'ज्' को 'क्' हो जाता है।

३०. जकारान्त पुँलिङ्ग शब्द 'सम्राज्' (चक्रवर्ती राजा)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
सम्राट्-ड्	सम्राजौ	सम्राजः	प्रथमा
सम्राजम्	"	"	द्वितीया
सम्राजा	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भिः	तृतीया
सम्राजे	"	सम्राड्भ्यः	चतुर्थी
सम्राजः	"	"	पञ्चमी

सम्राजः	सम्राजोः	सम्राजाम्	षष्ठी
सम्राजि	"	सम्राट्सु	सप्तमी
हे सम्राट्-ड्	हे सम्राजौ	हे सम्राजः	सम्बोधनम्

इसी प्रकार विराज्, परिव्राज्, राज्, विश्वसृज्, परिमृज् तथा विभ्राट् आदि शब्द जानो।

नोट—उक्त शब्दों में हलादि प्रत्यय परे होने पर ज् के स्थान पर ग् या क् न होकर ड् या ट् होजाता है।

३१. तकारान्त पुँलिङ्ग शब्द 'मरुत्' (वायु)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
मरुत्-द्	मरुतौ	मरुतः	प्रथमा
मरुतम्	"	"	द्वितीया
मरुता	मरुद्भ्याम्	मरुद्भिः	तृतीया
मरुते	"	मरुद्भ्यः	चतुर्थी
मरुतः	"	"	पञ्चमी
"	मरुतोः	मरुताम्	षष्ठी
मरुति	"	मरुत्सु	सप्तमी
हे मरुत्	हे मरुतौ	हे मरुतः	सम्बोधनम्

इसी प्रकार भूभृत्, विपश्चित् (विद्वान्), विश्वजित्, ग्रन्थकृत्, तनूनपात् तथा मन्त्रकृत् आदि तकारान्त शब्द जानो।

नोट—भिस्, भ्याम, भ्यस् प्रत्यय परे होने पर त को द् हो जाता है।

३२. तकारान्त पुँलिङ्ग शब्द 'धीमत्' (बुद्धिमान्)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
धीमान्	धीमन्तौ	धीमन्तः	प्रथमा
धीमन्तम्	धीमन्तौ	धीमतः	द्वितीया

(शेष मरुत् की भांति)

श्रीमत्, बुद्धिमत्, बलवत्, भगवत्, मघवत्, भवत् (आप), यावत, तावत् आदि मतुप् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप भी धीमत् के समान होते हैं।

इस मतुप् प्रत्यय के विषय में विशेष रूप से द्वितीय खण्ड में देखो।

३३. तकारान्त पुँलिङ्ग शब्द 'ददत्' (देता हुआ)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
ददत्	ददतौ	ददतः	प्रथमा
ददतम्	"	"	द्वितीया

(शेष मरुत् की भांति)

इसी प्रकार जाग्रत्, शासत्, बिभ्रत् आदि कुछ शतृ-प्रत्ययान्त शब्दों के रूप जानो।

३४. तकारान्त पुँलिङ्ग शब्द 'गच्छत्' (जाता हुआ)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः	प्रथमा
गच्छन्तम्	गच्छन्तौ	गच्छतः	द्वितीया

(शेष मरुत की भांति)

पठत्, चलत्, पश्यत्, दीव्यत्, कुर्वत् तथा चोरयत्, आदि शतृ प्रत्ययान्त कुछ शब्दों के रूप गच्छत् की तरह होते हैं।

नोट—शतृ प्रत्ययान्त शब्दों के विषय में विशेष रूप से द्वितीय खण्ड में देखो।

३५. तकारान्त पुँलिङ्ग शब्द 'महत्' (बड़ा)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
महात्	महान्तौ	महान्तः	प्रथमा
महान्तम्	महान्तौ	महतः	द्वितीया
हे महत्	हे महान्तौ	हे महान्तः	सम्बोधनम्

(शेष मरुत् शब्द की भांति)

३६. दकारान्त पुँलिङ्ग शब्द 'सुहृद्' (मित्र)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
सुहृत्-द्	सुहृदम्	सुहृदः	प्रथमा
सुहृदम्	"	"	द्वितीया
सुहृदा	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भिः	तृतीया
सुहृदे	"	सुहृद्भ्यः	चतुर्थी
सुहृदः	"	"	पञ्चमी
"	सुहृदोः	सुहृदाम्	षष्ठी

सुहृदि	सुहृदोः	सुहृत्सु	सप्तमी
हे सुहृत्-द्	हे सुहृदौ	हे सुहृदः	सम्बोधनम्

नोट—इसी प्रकार शेष दकारान्त पुँल्लिंग या स्त्रीलिंग शब्दों के रूप समझो इनमें केवल सु परे होने पर 'द्' को 'त्' हो जाता है। शेष विभक्तियों में कोई परिवर्तन नहीं होता।

३७. नकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द 'आत्मन्' (जीव या अपने आप)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
आत्मा	आत्मनौ	आत्मानः	प्रथमा
आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः	द्वितीया
आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः	तृतीया
आत्मने	"	आत्मभ्यः	चतुर्थी
आत्मनः	"	"	पञ्चमी
"	आत्मनोः	आत्मनाम्	षष्ठी
आत्मनि	"	आत्मसु	सप्तमी
हे आत्मन्	हे आत्मानौ	हे आत्मानः	सम्बोधनम्

इसीप्रकार अध्वन्, अश्मन् (पत्थर), ब्रह्मन्, यज्वन् तथा द्विजन्मन् (ब्राह्मण) शब्दों के रूप जानो।

३८. नकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द 'राजन्' (राजा)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
राजा	राजानौ	राजानः	प्रथमा

राजानम्	राजानौ	राज्ञः	द्वितीया
राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः	तृतीया
राज्ञे	"	राजभ्यः	चतुर्थी
राज्ञः	"	"	पञ्चमी
"	राज्ञोः	राज्ञाम्	षष्ठी
राज्ञि-राजनि	"	राजसु	सप्तमी
हे राजन्	हे राजानौ	हे राजानः	सम्बोधनम्

इसीप्रकार तक्षन्, प्रेमन् (पु०) भूमन्, महिमन्, गरिमन्, तथा कालिमन् आदि शब्द जानो।

नोट—तक्षन् के न को ण हो जाता है। शेष शब्दों में नहीं। उदाहरणार्थ तक्षन् शब्द के रूप लिखे जाते हैं।

३६. नकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द 'तक्षन्' (बढ़ई)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	बिभक्ति
तक्षा	तक्षाणौ	तक्षाणः	प्रथमा
तक्षाणम्	"	तक्ष्णः	द्वितीया
तक्ष्णा	तक्षभ्याम्	तक्षभिः	तृतीया
तक्ष्णे	"	तक्षभ्यः	चतुर्थी
तक्ष्णः	"	"	पञ्चमी
"	तक्ष्णोः	तक्ष्णाम्	षष्ठी
तक्षणि-तक्ष्णि	"	तक्षसु	सप्तमी
हे तक्षन्	हे तक्षाणौ	हे तक्षाणः	सम्बोधनम्

४०. नकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द 'मघवन्' (इन्द्र)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
मघवा	मघनौ	मघवानः	प्रथमा
मघवानम्	"	मघोनः	द्वितीया
मघोना	मघवभ्याम्	मघवभिः	तृतीया
मघोने	"	मघवभ्यः	चतुर्थी
मघोनः	"	"	पञ्चमी
"	मघोनोः	मघोनाम्	षष्ठी
मघोनि	"	मघवसु	सप्तमी
हे मघवन्	हे मघवानौ	हे मघवानः	सम्बोधनम्

नोट— इसी अर्थ में एक मघवत् शब्द मतुप् प्रत्ययान्त भी है। उसके रूप धीमत् शब्द के समान बनते हैं। देखो धीमत् शब्द का नोट।

ख—श्वन्-युवन् तथा मघवन् शब्दों के द्वितीया विभक्ति के बहुवचन से लेकर सप्तमी विभक्ति तक (सर्वनामस्थान भिन्न स्थलों में) अजादि प्रत्यय परे होने 'व' को उ हो जाता (श्व युवमघोनामतद्धिते) ।

४१. नकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द 'युवन्' (युवक)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
युवा	युवान्तौ	युवानः	प्रथमा
युबानम्	"	यूनः	द्वितीया

यूना	युवभ्याम्	युवभिः	तृतीया
यूने	”	युवभ्यः	चतुर्थी
यूनः	”	”	पञ्चमी
”	यूनोः	यूनाम्	षष्ठी
यूनि	”	युवसु	सप्तमी
हे युवन्	हे युवानौ	हे युवानः	सम्बोधनम्

४२ नकारान्त पुँल्लिङ्गशब्द 'श्वन्' (कुत्ता)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
श्वा	श्वानौ	श्वानः	प्रथमा
श्वानम्	”	शुनः	द्वितीया
शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः	तृतीया
शुने	”	श्वभ्यः	चतुर्थी
शुनः	”	”	पञ्चमी
शुनः	शुनोः	शुनाम्	षष्ठी
हे श्वन्	हे श्वानौ	हे श्वानः	सम्बोधनम्

४३. इन्नन्त पुँल्लिङ्ग शब्द 'शशिन्' (चन्द्र)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
शशी	शशिनौ	शशिनः	प्रथमा
शशिनम्	”	”	द्वितीया
शशिना	शशिभ्याम्	शशिभिः	तृतीया
शशिने	”	शशिभ्यः	चतुर्थी

शशिनः	शशिभ्याम	शशिभ्यः	पञ्चमी
”	शशिनोः	शशिनाम्	षष्ठी
शशिनि	”	शशिषु	सप्तमी
हे शशिन्	हे शशिनौ	हे शशिनः	सम्बोधनम्

इन् प्रत्यय संस्कृत में सम्बन्ध बताने के लिये (मतुप् अर्थ में) प्रयुक्त होता हैं। इन इन्नन्त शब्दों के रूप पुँल्लिग में शशिन् के समान समझो। यथा—धनिन्, गुणिन्, बलिन्, प्राणिन्, सुखिन्, दण्डिन्, शरीरिन्, देहिन्, मनीषिन्, मेधाविन्, मायाविन्, यशस्विन्, तपस्विन्, तेजस्विन्, अपराधिन्, पक्षिन्, श्रेष्ठिन्, प्रियवादिन्, सत्यभाषिन्, करिन्, आदि।

नियम—इन्नन्त शब्दों में अजादि प्रत्यय परे होने पर कोई रूपान्तर नहीं होता। परन्तु हलादि प्रत्यय परे होने पर 'न्' का लोप होजाता है। प्रथमा के एक वचन (सु प्रत्यय) में दीर्घ भी हो जाता है।

इन्नत शब्दों के शेष लिङ्गों के रूप द्वितीय खण्ड में देखो।

४४. इन्नन्त पुँलिङ्ग शब्द 'पथिन्' (मार्ग)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
पन्था	पन्थानौ	पन्थानः	प्रथमा
पन्थानम्	”	पथः	द्वितीया
पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः	तृतीया

पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः	चतुर्थी
पथः	"	"	पञ्चमी
"	पथोः	पथाम्	षष्ठी
पथि	"	पथिषु	सप्तमी
हे पन्थाः	हे पन्थानौ	हे पन्थानः	सम्बोधनम्

इसी प्रकार मथिन् तथा ऋभुक्षिन् (इन्द्र) के रूप होते हैं ।

४५. पकारान्त पुँल्लि‍ङ्ग शब्द 'गुप्' (रक्षा करना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	बिभक्ति
गुप्-गुब्	गुपौ	गुपः	प्रथमा
गुपम्	"	"	द्वितीया
गुपा	गुब्भ्याम्	गुब्भिः	तृतीया
गुपे	"	गुब्भ्यः	चतुर्थी
गुपः	"	"	पञ्चमी
"	गुपोः	गुपाम्	षष्ठी
गुपि	"	गुप्सु	सप्तमी
हे गुप्-गुब्	हे गुपौ	हे गुपः	सम्बोधनम्

इसीप्रकार लुप्, सरीसृप् (सांप), असुतृप् आदि शब्द जानो ।

४६. शकारान्त पुँल्लिंग शब्द 'दृश्' (आँख)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
दृक्-ग्	दृशौ	दृशः	प्रथमा
दृशम्	"	"	द्वितीया
दृशा	दृग्भ्याम्	दृग्भिः	तृतीया
दृशे	"	दृग्भ्यः	चतुर्थी
दृशः	"	"	पञ्चमी
"	दृशोः	दृशाम्	षष्ठी
दृशि	"	दृक्षु	सप्तमी
हे दृक्-ग्	हे दृशौ	हे दृशः	सम्बोधनम्

तादृश्, एतादृश्, यादृश्, मादृश् आदि के रूप इसी प्रकार बनते हैं।

४७. शकारान्त पुँल्लिंग शब्द 'विश्' (प्रजा)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
विट्-विड्	विशौ	विशः	प्रथमा
विशम्	"	"	द्वितीया
विशा	विड्भ्याम्	विड्भिः	तृतीया
विशे	"	विड्भ्यः	चतुर्थी
विशः	"	"	पञ्चमी
"	विशोः	विशाम्	षष्ठी
विशि	"	विट्सु-विटत्सु	सप्तमी
हे विट्-हे विड्	हे विशौ	हे विशः	सम्बोधनम्

४८. षकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द 'रत्नपुष्' (रत्न चुराने वाला)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
रत्नमुट्-रत्नमुड्	रत्नमुषौ	रत्नमुषः	प्रथमा
रत्नमुषम्	"	"	द्वितीया
रत्नमुषा	रत्नमुड्भ्याम्	रत्नमुड्भिः	तृतीया
रत्नमुषे	"	रत्नमुड्भ्यः	चतुर्थी
रत्नमुषः	"	"	पञ्चमी
"	रत्नमुषोः	रत्नमुषाम्	षष्ठी
रत्नमुषि	"	रत्नमुट्सु-रत्नमुट्त्सु	सप्तमी
हे रत्नमुट्-रत्नमुड्	हे रत्नमुषौ	हे रत्नमुषः	सम्बोधनम्

४९. सकारान्त पुँल्लिंग शब्द 'चन्द्रमस्' (चन्द्रमा)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः	प्रथमा
चन्द्रमसम्	"	"	द्वितीया
चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः	तृतीया
चन्द्रमसे	"	चन्द्रमोभ्यः	चतुर्थी
चन्द्रमसः	"	"	पञ्चमी
"	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्	षष्ठी
चन्द्रमसि	"	चन्द्रमस्सु	सप्तमी
हे चन्द्रमः	हे चन्द्रमसौ	हे चन्द्रमसः	सम्बोधनम्

इसी प्रकार सकारान्त पुँल्लिग शब्दों के रूप बनते हैं।

यथा—वेधस्, अनेहस् (काल), पुरोधस्, उशनस्, (शुक्राचार्य), सुमनस् (उत्तम मन वाला), दुर्वासस्, सुवासस्, सुयशस् आदि।

५०. सकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द 'विद्वस्' (विद्वान्)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः	प्रथमा
विद्वांसम्	"	विदुषः	द्वितीया
विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः	तृतीया
विदुषे	"	विद्वद्भ्यः	चतुर्थी
विदुषः	"	"	पञ्चमी
"	विदुषोः	विदुषाम्	षष्ठी
विदुषि	"	विद्वत्सु	सप्तमी
हे विद्वान्	हे विद्वांसौ	हे विद्वांसः	सम्बोधनम्

इसीप्रकार दाश्वस् तथा जगन्वस् आदि के रूप जानो।

५१. सकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द 'पुंस्' (मनुष्य)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः	प्रथमा
पुमांसम्	"	पुंसः	द्वितीया
पुंसा	पुंभ्याम्	पुभिः	तृतीया
पुंसे	"	पुंभ्यः	चतुर्थी
पुंसः	"	"	पञ्चमी

पुंसः	पुंसोः	पुंसाम्	षष्ठी
पुंसि	"	पुंसु	सप्तमी
हे पुमन्	हे पुमांसौ	हे पुमांसः	सम्बोधनम्

५२. हकारान्त पुँलिङ्ग शब्द 'अनडुह्' (बैल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
अनड्वान्	अनड्वाहौ	अनड्वाहः	प्रथमा
अनड्वाहम्	"	अनडुहः	द्वितीया
अनडुहा	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भिः	तृतीया
अनडुहे	"	अनडुद्भ्यः	चतुर्थी
अनडुहः	"	"	पञ्चमी
"	अनडुहोः	अनडुहाम्	षष्ठी
अनडुहि	"	अनडुत्सु	सप्तमी
हे अनड्वन्	हे अनड्वाहौ	हे अनड्वाहः	सम्बोधनम्

हलन्त स्त्रीलिंग प्रकरण

चकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'वाच' (वाणी)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
वाक्-ग्	वाचौ	वाचः	प्रथमा
वाचम्	"	"	द्वितीया
वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः	तृतीया
वाचे	"	वाग्भ्यः	चतुर्थी
वाचः	"	"	पञ्चमी

वाचः	वाचोः	वाचाम्	षष्ठी
वाचि	"	वाक्षु	सप्तमी
हे वाक्-ग्	हे वाचौ	हे वाचः	सम्बोधनम्

चकारान्त स्त्रीलिंग व पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं।

५५. जकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'स्रज्' (माला)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
स्रक्-स्रग्	स्रजौ	स्रजः	प्रथमा
स्रजम्	"	"	द्वितीया
स्रजा	स्रग्भ्याम्	स्रग्भिः	तृतीया
स्रजे	"	स्रग्भ्यः	चतुर्थी
स्रजः	"	"	पञ्चमी
"	स्रजोः	स्रजाम्	षष्ठी
स्रजि	"	स्रक्षु	सप्तमी
हे स्रक्-स्रग्	हे स्रजौः	हे स्रजः	सम्बोधनम्

इसी प्रकार शेष जकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द जानो। कुछ सम्राज् आदि शब्दों को छोड़ कर शेष भिषज् आदि जकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों में इन से कोई भेद नहीं।

५६. तकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'हरित्' (दिशा)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
हरित्	हरितौ	हरितः	प्रथमा
हरितम्	"	"	द्वितीया

हरिता	हरिद्भ्याम्	हरिद्भिः	तृतीया
हरिते	”	हरिद्भ्यः	चतुर्थी
हरितः	”	”	पञ्चमी
”	हरितोः	हरिताम्	षष्ठी
हरिति	”	हरित्सु	सप्तमी
हे हरित्	हे हरितौ	हे हरितः	सम्बोधनम्

इसीप्रकार सरित् आदि शब्दों के रूप जानो।

५७. दकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'शरद्' (शरद् ऋतु या वर्ष)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
शरत्-शरद्	शरदौ	शरदः	प्रथमा
शरदम्	”	”	द्वितीया
शरदा	शरद्भ्याम्	शरद्भिः	तृतीया
शरदे	”	शरद्भ्यः	चतुर्थी
शरदः	”	”	पञ्चमी
”	शरदोः	शरदाम्	षष्ठी
शरदि	”	शरत्सु	सप्तमी
हे शरत्-शरद्	हे शरदौ	हे शरदः	सम्बोधनम्

इसी प्रकार आपद्, विपद्, संपद् दृषद्, आदि शब्दों के रूप जानो। सर्वनाम भिन्न शेष दकारान्त पुँल्लिग शब्दों के रूप भी स्त्रीलिङ्ग से भिन्न नहीं होते।

५८. धकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'समिध्' (समिधा)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
समित्-द्	समिधौ	समिधः	प्रथमा
समिधम्	"	"	द्वितीया
समिधा	समिद्भ्याम्	समिद्भिः	तृतीया
समिधे	"	समिद्भ्यः	चतुर्थी
समिधः	"	"	पञ्चमी
"	समिधोः	समिधाम	षष्ठी
समिधि	"	समित्सु	सप्तमी
हे समित्-द्	हे समिधौ	हे समिधः	सम्बोधनम्

इसीप्रकार स्त्रीलिंग शब्दों—क्षुध्, क्रुध्, युध्, वीरुध् आदि के रूप समझो। धकारान्त शब्दों के रूप दोनों लिङ्गों-स्त्रीलिङ्ग तथा पुँल्लिङ्ग—में एक समान होते हैं।

५९. पकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'अप्' (पानी)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
×	×	आपः	प्रथमा
		अपः	द्वितीया
		अद्भिः	तृतीया
		अद्भ्यः	चतुर्थी
		"	पञ्चमी

		अपाम्	षष्ठी
		अप्सु	सप्तमी
		हे आपः	सम्बोधनम्

इसके एक वचन तथा द्विवचन में रूप नहीं बनते ।

६०. भकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'ककुभ्' (दिशा)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
ककुप्-ब्	ककुभौ	ककुभः	प्रथमा
ककुभम्	"	"	द्वितीया
ककुभा	ककुब्भ्याम्	ककुब्भिः	तृतीया
ककुभे	"	ककुब्भ्यः	चतुर्थी
ककुभः	"	"	पञ्चमी
"	ककुभोः	ककुभाम्	षष्ठी
ककुभि	"	ककुप्सु	सप्तमी
हे ककुभ्-ब्	हे ककुभौ	हे ककुभः	सम्बोधनम्

६१. रकारान्त स्त्रीलिंग शब्द 'पुर्' (नगरी)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
पूः	पुरौ	पुरः	प्रथमा
पुरम्	"	"	द्वितीया
पुरा	पूर्भ्याम्	पूर्भिः	तृतीया
पुरे	"	पूर्भ्यः	चतुर्थी
पुरः	"	"	पञ्चमी

पुरः	पुरोः	पुराम्	षष्ठी
पुरि	,,	पूर्षु	सप्तमी
हे पूः	हे पुरौ	हे पुरः	सम्बोधनम्

इसी प्रकार धुर् (भार) गिर् आदि शब्द जानो। गिर् शब्द के रूप नीचे दिये जाते हैं।

६२. रकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'गिर्' (वाणी)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
गीः	गिरौ	गिरः	प्रथमा
गिरम्	गिरौ	गिरः	द्वितीया
गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः	तृतीया
गिरे	,,	गीर्भ्यः	चतुर्थी
गिरः	,,	,,	पञ्चमी
,,	गिरोः	गिराम्	षष्ठी
गिरि	,,	गीर्षु	सप्तमी
हे गीः	हे गिरौ	हे गिरः	सम्बोधनम्

६३. वकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'दिव्' (स्वर्ग)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	बिभक्ति
द्यौः	दिवौ	दिवः	प्रथमा
दिवम्	,,	,,	द्वितीया
दिवा	द्युभ्याम्	द्युभिः	तृतीया
दिवे	,,	द्युभ्यः	चतुर्थी

दिवः	द्युभ्याम्	द्युभ्यः	पञ्चमी
”	दिवोः	दिवाम्	षष्ठी
दिवि	”	द्युषु	सप्तमी
हे द्यौः	हे दिवौ	हे दिवः	सम्बोधनम्

६४. शकारान्त स्त्रीलिंग शब्द 'दिश्' (दिशा)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
दिक्-दिग्	दिशौ	दिशः	प्रथमा
दिशम्	”	”	द्वितीया
दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः	तृतीया
दिशे	”	दिग्भ्यः	चतुर्थी
दिशः	”	”	पञ्चमी
”	दिशोः	दिशाम्	षष्ठी
दिशि	”	दिक्षु	सप्तमी
हे दिग्-दिक्	हे दिशौ	दिशः	सम्बोधनम्

इसी प्रकार दृश्-तादृश् आदि स्त्रीलिंग शब्द जानों। शकारान्त शब्द दोनों लिंगों में समान है।

६५. षकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'आशिष्' (आशीर्वाद)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
आशीः	आशिषौ	आशिषः	प्रथमा
आशिषम्	”	”	द्वितीया
आशिषा	आशीर्भ्याम्	आशीर्भिः	तृतीया

आशिषे	आशीर्भ्याम्	आशीर्भ्यः	चतुर्थी
आशिषः	"	"	पञ्चमी
"	आशिषोः	आशिषाम्	षष्ठी
आशिषि	"	आशीष्षु	सप्तमी
हे आशीः	हे आशिषौ	हे आशिषः	सम्बोधनम्

नोट—हलादि प्रत्यय परे होने पर षकार से पूर्व का स्वर (इ या उ) दीर्घ हो जाता है तथा भिस्, भ्याम् एवं भ्यस् परे होने पर ष् को र् हो जाता है।

इसी प्रकार सजुष् आदि शब्द जानो।

६६. षकारान्त स्त्री लिङ्ग शब्द 'सजुष्' (साथी)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
सजूः	सजुषौ	सजुषः	प्रथमा
सजुषम्	"	"	द्वितीया
सजुषा	सजूर्भ्याम्	सजूर्भिः	तृतीया
सजुषे	"	सजूर्भ्यः	चतुर्थी
सजुषः	"	"	पञ्चमी
"	सजुषोः	सजुषाम्	षष्ठी
सुजुषि	"	सजूष्षु-सजूःषु	सप्तमी
हे सजूः	हेसजुषौ	हे सजुषः	सम्बोधनम्

६७. षकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'त्विष्' (कान्ति)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति

त्विट्-त्विड्	त्विषौ	त्विषः	प्रथमा
त्विषम्	"	"	द्वितीया
त्विषा	त्विड्भ्याम्	त्विड्भिः	तृतीया
त्विषे	"	त्विड्भ्यः	चतुर्थी
त्विषः	"	"	पञ्चमी
"	त्विषोः	त्विषाम्	षष्ठी
त्विषि	"	त्विट्त्सु-त्विट्सु	सप्तमी
हे त्विट्-त्विड्	हे त्विषौ	हे त्विषः	सम्बोधनम्

इसी प्रकार प्रावृष् आदि षकारान्त स्त्रीलिंग शब्द जानो।

६८. सकारान्त स्त्रीलिंग शब्द 'भास्' (दीप्ति, चमक)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
भाः	भासौ	भासः	प्रथमा
भासम्	भासौ	भासः	द्वितीया
भासा	भाभ्याम्	भाभिः	तृतीया
भासे	"	भाभ्यः	चतुर्थी
भासः	"	"	पञ्चमी
"	भासोः	भासाम्	षष्ठी
भासि	"	भास्सु	सप्तमी
हे भाः	हे भासौ	हे भासः	सम्बोधनम्

६९. हकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'उष्णिह्' (यवागू)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
उष्णिक्-ग्	उष्णिहौ	उष्णिहः	प्रथमा
उष्णिहम्	"	"	द्वितीया
उष्णिहा	उष्णिग्भ्याम्	उष्णिग्भिः	तृतीया
उष्णिहे	"	उष्णिग्भ्यः	चतुर्थी
उष्णिहः	"	"	पञ्चमी
"	उष्णिहोः	उष्णिहाम्	षष्ठी
उष्णिहि	"	उष्णिक्षु	सप्तमी
हे उष्णिक्-ग्	हे उष्णिहौ	हे उष्णिहः	सम्बोधनम्

७०. हकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'उपानह्' (जूता)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
उपानत्-उपानद्	उपानहौ	उपानहः	प्रथमा
उपानहम्	"	"	द्वितीया
उपानहा	उपानद्भ्याम्	उपानद्भिः	तृतीया
उपानहे	"	उपानद्भ्यः	चतुर्थी
उपानहः	"	"	पञ्चमी
"	उपानहोः	उपानहाम्	षष्ठी
उपानहि	"	उपानत्सु	सप्तमी
हे उपानत्-उपानद्	हे उपानहौ	उपानहः	सम्बोधनम्

हलन्त नपुंसक लिङ्ग प्रकरण

७१. तकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द 'जगत्' (संसार)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
जगत्	जगती	जगन्ति	प्रथमा
"	"	"	द्वितीया
(शेष मरुत् शब्द के शमान)			
जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भिः	तृतीया
जगते	"	जगद्भ्यः	चतुर्थी
जगतः	"	"	पञ्चमी
"	जगतोः	जगताम्	षष्ठी
जगति	"	जगत्सु	सप्तमी
हे जगत्	हे जगती	हे जगन्ति	सम्बोधनम्

इसी प्रकार बृहत् (बड़ा) भास्वत् (चमकीला) तथा मतुप् प्रत्ययान्त नपुंसिक लिंग शब्दों के रूप जानो। यथाः— गुणवत्, बलवत्, धनवत् इत्यादि।

नोट—शतृ प्रत्ययान्त नपुंसक लिङ्ग शब्दों के रूप के सम्बन्ध में द्वितीय खण्ड में देखो।

७२. तकारान्त नपुंसकलिंग शब्द 'महत्' (बड़ा)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
महत्	महती	महान्ति	प्रथमा

महत्	महती	महान्ति	द्वितीया
हे महत्	हे महती	हे महान्ति	सम्बोधनम्

(शेष जगत् शब्द के समान)

७३. नकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द 'कर्मन्' (काम)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
कर्म	कर्मणी	कर्माणि	प्रथमा
"	"	"	द्वितीया
कर्मणा	कर्मभ्याम्	कर्मभिः	तृतीया
कर्मणे	"	कर्मभ्यः	चतुर्थी
कर्मणः	"	"	पञ्चमी
"	कर्मणोः	कर्मणाम्	षष्ठी
कर्मणि	"	कर्मसु	सप्तमी
हे कर्मन्-हे कर्म	हे कर्मणी	हे कर्माणि	सम्बोधनम्

इसी प्रकार वर्मन् (कवच) शर्मन् (सुख), ब्रह्मन्, चर्मन्, जन्मन, आदि शब्दों के रूप जानो।

७४. नकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द 'नामन् (नाम)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
नाम	नाम्नी-नामनी	नामानि	प्रथमा
"	"	"	द्वितीया
नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः	तृतीया
नाम्ने	"	नामभ्यः	चतुर्थी

नाम्नः	नामभ्याम्	नामभ्यः	पञ्चमी
"	नाम्नोः	नाम्नाम्	षष्ठी
नाम्नि	"	नामसु	सप्तमी
हे नामन्-हे नाम	हेनाम्नी-नामनी	हे नामानि	सम्बोधनम्

इसी प्रकार लोमन्, प्रेमन् (न०), दामन् (रस्सी), सामन् आदि शब्द जानो।

७५. नकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द 'अहन्' (दिन)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
अहः	अह्नी-अहनी	अहानि	प्रथमा
"	"	"	द्वितीया
अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभिः	तृतीया
अह्ने	"	अहोभ्यः	चतुर्थी
अह्नः	"	"	पञ्चमी
"	अह्नोः	अह्नाम्	षष्ठी
अह्नि-अहनि	अह्नोः	अहस्सु	सप्तमी
हे अहः	हे अह्नी-अहनी	हे अहानि	सम्बोधनम्

७६. इन्नन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द 'मनोहारिन्' (सुन्दर)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
मनोहारि	मनोहारिणी	मनोहारीणि	प्रथमा
"	"	"	द्वितीया
हे मनोहारिन्-मनोहारि	"	"	सम्बोधनम्

(शेष शशिन् शब्द के समान)

इसी प्रकार समीपवर्तिन्, गुणिन्, सुखदायिन्, तेजस्विन् आदि सम्पूर्ण इन्नन्त शब्दों के नपुंसक लिंग में रूप बनेंगे।

७७. षकारान्त नपुंसकलिंग शब्द 'हविष्' (आहुति)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
हविः	हविषी	हवींषि	प्रथमा
"	"	"	द्वितीया
हविषा	हविर्भ्याम्	हविर्भिः	तृतीया
हविषे	"	हविर्भ्यः	चतुर्थी
हविषः	"	"	पञ्चमी
"	हविषोः	हविषाम्	षष्ठी
हविषि	"	हविष्षु	सप्तमी
हे हविः	हे हविषी	हे हवींषि	सम्बोधनम्

इसीप्रकार अर्चिष् (ज्योति) ज्योतिष् आदि शब्द जानो। धनुष् आदि शब्द भी इसी प्रकार के हैं। केवल इ—उ का भेद है।

७८. षकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द 'धनुष्' (धनुष)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
धनुः	धनुषी	धनूंषि	प्रथमा
"	"	"	द्वितीया

धनुषा	धनुर्भ्याम्	धनुर्भिः	तृतीया
धनुषे	,,	धनुर्भ्यः	चतुर्थी
धनुषः	,,	,,	पञ्चमी
,,	धनुषोः	धनुषाम्	षष्ठी
धनुषि	,,	धनुष्षु	सप्तमी
हे धनुः	हे धनुषी	हे धनूंषि	सम्बोधनम्

इसी प्रकार चक्षुष्, आयुष्, जनुष् (जन्म) आदि शब्द जानो।

७९. सकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द 'मनस्' (मन)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
मनः	मनसी	मनांसि	प्रथमा
,,	,,	,,	द्वितीया
मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः	तृतीया
मनसे	,,	मनोभ्यः	चतुर्थी
मनसः	,,	,,	पञ्चमी
,,	मनसोः	मनसाम्	षष्ठी
मनसि	,,	मनस्सु	सप्तमी
हे मनः	हे मनसी	हे मनांसि	सम्बोधनम्

इसी प्रकार पयस्, अयस्, श्रेयस् (न०), वचस्, वयस्, रजस्, तमस्, नमस्, शिरस्, सरस्, यशस्, अम्भस्, चेतस्, वाससू, छन्दस्, रक्षस् आदि शब्दों के रूप जानो।

सर्वनाम-प्रकरण

८०. सर्व शब्द 'पुल्लिङ्ग' (सब)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	बिभक्ति
सर्वः	सर्वौ	सर्वे	प्रथमा
सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्	द्वितीया
सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः	तृतीया
सर्वस्मै	"	सर्वेभ्यः	चतुर्थी
सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	पञ्चमी
सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्	षष्ठी
सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु	सप्तमी
हे सर्व	हे सर्वौ	हे सर्वे	सम्बोधनम्

इसी प्रकार विश्व (सब), नेम (आधा), सम् , (सब) सिम (सव) के रूप होंगे । संसार वाची विश्व शब्द के रूप बालक के समान होंगे ।

८१. सर्व शब्द 'स्त्रीलिङ्ग' (सब)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
सार्वा	सर्वे	सर्वाः	प्रथमा
सर्वाम्	"	"	द्वितीया
सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः	तृतीया
सर्वस्यै	"	सर्वाभ्यः	चतुर्थी
सर्वस्याः	"	"	पञ्चमी

सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्	षष्ठी
सर्वस्यां	"	सर्वासु	सप्तमी
हे सर्वे	हे सर्वे	हे सर्वाः	सम्बोधनम्

८२. सर्व शब्द 'नपुंसकलिङ्ग' (सब)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि	प्रथमा
सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि	द्वितीया

(शेष पुँल्लिङ्ग के समान)

८३. तद् शब्द 'पुंल्लिंग' (वह)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
सः	तौ	ते	प्रथमा
तम्	"	तान्	द्वितीया
तेन	ताभ्याम्	तैः	तृतीया
तस्मै	"	तेभ्यः	चतुर्थी
तस्मात्	"	"	पञ्चमी
तस्य	तयोः	तेषाम्	षष्ठी
तस्मिन्	"	तेषु	सप्तमी

८४. तद् शब्द 'स्त्रीलिङ्ग' (वह)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
सा	ते	ताः	प्रथमा
ताम्	ते	ताः	द्वितीया

तया	ताभ्याम्	ताभिः	तृतीया
तस्यै	”	ताभ्यः	चतुर्थी
तस्याः	”	”	पञ्चमी
”	तयोः	तासाम्	षष्ठी
तस्याम्	”	तासु	सप्तमी

८५. 'तद्' शब्द नपुंसकलिङ्ग (वह)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
तत्	ते	तानि	प्रथमा
”	”	”	द्वितीया

(शेष पुँल्लिंग के समान)

८६. 'यद्' शब्द पुल्लिङ्ग (जो)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
यः	यौ	ये	प्रथमा
यम्	”	यान्	द्वितीया
येन	याभ्याम्	यैः	तृतीया
यस्मै	”	येभ्यः	चतुर्थी
यस्मात्	”	”	पञ्चमी
यस्य	ययोः	येषाम्	षष्ठी
यस्मिन्	”	येषु	सप्तमी

८७. 'यद्' शब्द स्त्रीलिङ्ग (जो)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
या	ये	याः	प्रथमा
याम्	”	”	द्वितीया

यया	याभ्याम्	याभिः	तृतीया
यस्यै	"	याभ्यः	चतुर्थी
यस्याः	"	"	पञ्चमी
"	ययोः	यासाम्	षष्ठी
यस्याम्	"	यासु	सप्तमी

८८. 'यद्' शब्द नपुंसकलिंग (जो)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
यत्	ये	यानि	प्रथमा
यत्	ये	यानि	द्वितीया

(शेष रूप पुँल्लिंग के समान)

८९. 'इदम्' शब्द पुँल्लिङ्ग (यह)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
अयम्	इमौ	इमे	प्रथमा
इमं-एनम	इमौ-एनौ	इमान्-एनान्	द्वितीया
अनेन-एनेन	आभ्याम्	एभिः	तृतीया
अस्मै	"	एभ्यः	चतुर्थी
अस्मात्	"	"	पञ्चमी
अस्य	अनयोः-एनयोः	एषाम्	षष्ठी
अस्मिन्	" "	एषु	सप्तमी

६०. 'इदम्' शब्द स्त्रीलिङ्ग (यह)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
इयम्	इमे	इमाः	प्रथमा
इमाम्-एनाम्	इमे-एने	इमाः-एनाः	द्वितीया
अनया-एनया	आभ्याम्	आभिः	तृतीया
अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः	चतुर्थी
अस्याः	"	"	पञ्चमी
"	अनयो-एनयोः	आसाम्	षष्ठी
अस्याम्	"—"	आसु	सप्तमी

६१. 'इदम्' शब्द नपुंसकलिंग (यह)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
इदम्	इमे	इमानि	प्रथमा
इदं-एनत्	इमे-एने	इमानि-एनानि	द्वितीया

(शेष पुँल्लिंग के समान)

६२. एतद् शब्द 'पुंल्लिंग' (वह)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
एषः	एतौ	एते	प्रथमा
एतम्-एनम्	एतौ-एनौ	एतान्-एनान्	द्वितीया
एतेन-एनेन	एताभ्याम्	एतैः	तृतीया
एतस्मै	"	एतेभ्यः	चतुर्थी

एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः	पञ्चमी
एतस्य	एतयोः-एनयोः	एतेषाम्	षष्ठी
एतस्मिन्	" "	एतेषु	सप्तमी

तद् तथा एतद् शब्दों में जिस प्रकार केवल 'ए' का अन्तर है, उसी प्रकार इनके रूपों में भी समझो। अर्थात् तद् शब्द के रूपों से पूर्व 'ए' जोड़ देने से एतद् शब्द के रूप बन जाते हैं। परन्तु 'एन' आदेश में नहीं।

६३. 'एतद्' शब्द स्त्रीलिङ्ग (यह)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
एषा	एते	एताः	प्रथमा
एतां-एनाम्	एते-एने	एताः-एनाः	द्वितीया
एतया-एनया	एताभ्याम्	एताभिः	तृतीया
एतस्यै	"	एताभ्यः	चतुर्थी
एतस्याः	"	"	पञ्चमी
"	एतयोः-एनयोः	एतासाम्	षष्ठी
एतस्याम्	" "	एतासु	सप्तमी

६४. 'एतद्' शब्द नपुंसकलिङ्ग (यह)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
एतत्	एते	एतानि	प्रथमा
एतत्-एनत्	एते-एने	एतानि-एनानि	द्वितीया

(शेष पुंल्लिङ्ग के समान)

६५. 'किम्' शब्द पुँल्लिङ्ग (कौन)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
क:	कौ	के	प्रथमा
कम्	कौ	कान्	द्वितीया
केन	काभ्याम्	कै:	तृतीया
कस्मै	,,	केभ्य:	चतुर्थी
कस्मा	,,	,,	पञ्चमी
कस्य	कयो:	केषाम्	षष्ठी
कस्मिन्	,,	केषु	सप्तमी

६६. 'किम्' शब्द स्त्रीलिंग (कौन)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
का	के	का:	प्रथमा
काम्	,,	,,	द्वितीया
कया	काभ्याम्	काभि:	तृतीया
कस्यै	,,	काभ्य:	चतुर्थी
कस्या:	काभ्याम्	,,	पञ्चमी
कस्या:	कयो:	कासाम्	षष्ठी
कस्याम्	,,	कासु	सप्तमी

६७. 'किम्' शब्द नपुंसक लिङ्ग (कौन)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
किम्	के	कानि	प्रथमा
,,	,,	,,	द्वितीया

(शेष रूप पुंल्लिग के समान)

९८. 'अस्मद्' शब्द तीनों लिगों में (मैं)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
अहम	आवाम्	वयम्	प्रथमा
माम्-मा	आवां-नौ	अस्मान्-नः	द्वितीया
मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः	तृतीया
मह्यम्-मे	आवाभ्यां-नौ	अस्मभ्यम्-नः	चतुर्थी
मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्	पञ्चमी
मम-मे	आवयोः-नौ	अस्माकम्-नः	षष्ठी
मयि	आवयोः	अस्मासु	सप्तमी

अस्मद् शब्द का लिङ्ग भेद नहीं होता। स्त्री तथा पुरुष दोनों अपने लिये अहम् का प्रयोग करेंगे । आंग्लभाषा तथा हिन्दी आदि अन्य भाषाओं में भी ऐसा ही पाया जाता है। (ख) द्वितीया, चतुर्थी तथा षष्ठी विभक्ति के तीनों वचनों में दो-दो रूप चलते हैं। परन्तु दूसरे रूपों का प्रयोग वाक्य प्रारम्भ में तथा अव्यय या सम्बोधन के साथ नहीं होता।

९९. 'युष्मद्' शब्द तीनो लिंगों' में (तुम)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
त्वा	युवाम्	यूयम	प्रथमा
त्वाम्-त्वा	युवाम्-वाम्	युष्मान्-वः	द्वितीया
त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः	तृतीया

तुभ्यम्-ते	युवाभ्याम्-वाम्	युष्मभ्यम्-वः	चतुर्थी
त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्	पञ्चमी
तव-ते	युवयोः-वाम्	युष्माकम्-वः	षष्ठी
त्वयि	युवयोः	युष्मासु	सप्तमी

'अस्मद्' शब्द की भांति 'युष्मद्' में भी लिङ्ग भेद नहीं होता। उसकी भी द्वितीया, चतुर्थी, तथा षष्ठी विभक्ति के तीनों वचनों में दो-दो रूप बनते हैं। परन्तु दूसरे रूपों (त्वा-वाम्-वः इत्यादि) का प्रयोग वाक्य आरम्भ में तथा अव्यय या सम्बोधन के साथ नहीं होता।

१०० कति शब्द (कितना)

(नित्य बहुवचनान्त होता है)

पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुँसक०	विभक्ति
कति	कति	कति	प्रथमा
"	"	"	द्वितीया
कतिभिः	कतिभिः	कतिभिः	तृतीया
कतिभ्यः	कतिभ्यः	कतिभ्यः	चतुर्थी
"	"	"	पञ्चमी
कतीनाम्	कतीनाम्	कतीनाम्	षष्ठी
कतिषु	कतिषु	कतिषु	सप्तमी

नोट:—तीनों लिङ्गों में रूप एक समान होते हैं।

संख्या वाची-शब्द-प्रकरण

(एक 'शब्द' एक)

(एक शब्द केवल एकवचन में होता है)

पुँल्लिग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसक लिंग	विभक्ति
एकः	एका	एकम्	प्रथमा
एकम्	एकाम्	"	द्वितीया
एकेन	एकया	एकेन	तृतीया
एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै	चतुर्थी
एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मात्	पञ्चमी
एकस्य	"	एकस्य	षष्ठी
एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्	सप्तमी

जब 'एक' शब्द 'कई' अर्थ में प्रयुक्त होता है तो इसके बहुवचन में रूप चलते हैं, और वे 'सर्व' की तरह होते हैं।

नोट—संख्यावाची शब्द भी एक प्रकार के विशेषण हैं। इनके लिंग, विभक्ति तथा वचन भी संज्ञा (विशेष्य) के अनुसार ही होते हैं। एक, द्वि, त्रि, चतुर शब्द के तो तीनों लिंगों में पृथक्-पृथक् रूप बनते हैं। परन्तु इन से आगे की संख्याओं-पञ्चन षष् इत्यादि-के रूप तीनों लिंगों में एक समान होते हैं।

१०२. 'द्वि' शब्द (दो)

[तीनों लिंगों में]

(द्वि शब्द केवल द्विवचन में ही होता है)

पुँल्लिग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसक लिंग	विभक्ति
द्वौ	द्वे	द्वे	प्रथमा
"	"	"	द्वितीया
द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	तृतीया
"	"	"	चतुर्थी
"	"	"	पञ्चमी
द्वयोः	द्वयोः	द्वयो	षष्ठी
"	"	"	सप्तमी

नोट—संख्यावाची शब्दों का सम्बोधन नहीं होता।

१०३. 'त्रि' शब्द (तीन)

[तीनों लिंगों में]

(त्रि शब्द केवल बहुवचन में होता है)

पुँल्लिग	स्त्री लिंग	नपुंसक लिंग	विभक्ति
त्रयः	तिस्रः	त्रीणि	प्रथमा
त्रीन्	"	"	द्वितीया
त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः	तृतीया

त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः	चतुर्थी
”	”	”	पञ्चमी
त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्	षष्ठी
त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु	सप्तमी

नोट—यह ध्यान में रखना चाहिये कि ह्रस्व ऋकारान्त शब्द होते हुए भी तिसृ तथा चतसृ शब्दों को षष्ठी के बहुवचन में दीर्घ नहीं होता। (न तिसृ चतसृ)।

'चतुर्' शब्द (चार)

१०४ (तीनों लिंगों में)

(चतुर् शब्द केवल बहुवचन में ही प्रयुक्त होता है)

पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसक लिङ्ग	विभक्ति
चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि	प्रथमा
चतुरः	”	”	द्वितीया
चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः	तृतीया
चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः	चतुर्थी
”	”	”	पञ्चमी
चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्	षष्ठी
चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु	सप्तमी

१०५-७ पञ्चन् (पांच) । षष् (छः) । सप्तन् (सात)

(तीनों लिङ्गों में एक समान रूप होते हैं)

बहुवचन	बहुवचन	बहुवचन	विभक्ति
पञ्च	षट्	सप्त	प्रथमा
,,	,,	,,	द्वितीया
पञ्चभिः	षड्भिः	सप्तभिः	तृतीया
पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः	चतुर्थी
,,	,,	,,	पञ्चमी
पञ्चानाम्	षण्णाम्	सप्तानाम्	षष्ठी
पञ्चसु	षट्सु-षट्त्सु	सप्तसु	सप्तमी

१०८-१० अष्टन् (आठ) । नवन् (नौ) । दशन् (दस)

(तीनों लिङ्गों में एक समान रूप होते हैं)

बहुवचन	बहुवचन	बहुवचन	विभक्ति
अष्टौ-अष्ट	नव	दश	प्रथमा
,,	,,	,,	द्वितीया
अष्टाभिः-अष्टभिः	नवभिः	दशभिः	तृतीया
अष्टाभ्यः-अष्टभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः	चतुर्थी
,, ,,	,,	,,	पञ्चमी
अष्टानाम्	नवानाम्	दशानाम्	षष्ठी
अष्टासु-अष्टसु	नवसु	दशसु	सप्तमी

विशेषणवाची शब्द

कुछ नाम या सुबन्त पद किसी संज्ञा के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं। उनका अपना कोई नियत लिङ्ग नहीं होता। वे अपने विशेष्य (संज्ञा) के अनुसार ही लिङ्ग धारण कर लेते हैं। इस प्रकार के विशेषण वाची शब्दो के पृथक् रूप लिखना आवश्यक प्रतीत नहीं होता।

नियम—विशेषण शब्दों के अपने २ अन्तिम अक्षर (स्वर या व्यञ्जन) के अनुसार तीनों लिङ्गों में रूप बना लेने चाहिये। उदाहरणार्थ –

[देखो अगला पृष्ठ]

प्रमुख विशेषणवाची शब्द

अकारान्त—कोमल सुन्दर, श्याम, पीत, धवल दुर्बल, मधुर, शीत, उष्ण, कठोर, सरल, क्रुद्ध, पठित, पठनीय, पठितव्य।

इकारान्त—आदि, प्रभृति, शुचि।

उकारान्त—स्वादु, कटु, मृदु, ऋजु, दयालु, गुरु, लघु, बहु।

ऋकारान्त—कर्तृ, धातृ, दातृ, हर्तृ।

(क) अजन्त विशेषण वाची शब्द

	मूल शब्द	लिङ्ग		अन्तिम वर्ण	किस शब्द के समान रूप होंगे	
१	कोमल ❀	कोमलः	[पु०]	[अ]	बालक समान	[१]
		कोमला	[स्त्री]	[आ]	लता के समान	[११]
		कोमलं	[न०]	[अ]	वन के समान	[२३]
	सुन्दर	सुन्दरी	[स्त्री]	[ई]	नदी के समान	[१३]
२	आदि	आदिः	[पु०]	[इ]	मुनि के समान	[२]
		आदिः	[स्त्री]	[इ]	मति के समान	[१२]
		आदि	[न०]	[इ]	वारि के समान	[२४]
३	स्वादु +	स्वादुः	[पु०]	[उ]	भानु के समान	[५]
		स्वादुः	[स्त्री]	[उ]	धेनु के समान	[१६]
		स्वाद्वी	[स्त्री]	[ई]	नदी के समान	[१३]
		स्वादु	[न०]	[उ]	मधु के समान	[२६]
४	कर्तृ ×	कर्तृ	[पु०]	[ऋ]	धातृ के समान	[६]
		कर्त्री	[स्त्री]	[ई]	नदी के समान	[१३]
		कर्तृ	[न०]	[ऋ]	धातृ के समान	[२७]

❀ अकारान्त शब्दों को स्त्रीलिंग में आ (टाप्) या ई (ङीप् , ङीष्) प्रत्यय होता है। अतः इन दोनों के उदाहरण के रूप में कोमल (कोमला) तथा सुन्दर (सुन्दरी) शब्द ऊपर दे दिये गए हैं।

+ उकारान्त शब्दों को स्त्रीलिंग में विकल्प कर के ई (ङीप्) प्रत्यय होत है। अतएव स्वादु शब्द के उभयविध रूप (स्वादुः— स्वाद्वी) दिये गए हैं।

× ऋकारान्त शब्दों को स्त्रीलिंग में ई (ङीप्) होता है। अतः कर्तृ का स्त्रीलिंग में कर्त्री रूप बनता है।

कुछ हलन्त विशेषण वाची शब्दों के रूप निम्न होंगे।

१११. तकारान्त 'महत्' शब्द (स्त्रीलिंग) में

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
महती	महत्यौ	महत्यः	प्रथमा
महतीम्	”	महतीः	द्वितीया

[इत्यादि नदी शब्द के समान]

११२. तकारान्त 'महत्' शब्द [नपुंसक लिंग में]

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
महत्	महती	महान्ति	प्रथमा
”	”	”	द्वितीया

(शेष पुँल्लिंग के समान)

११३. 'भवत्' शब्द पुंल्लिङ्ग [आप]

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
भवान्	भवन्तौ	भवन्तः	प्रथमा
भवन्तम्	"	भवतः	द्वितीय

(इत्यादि श्रीमत् ३२ शब्द के अनुसार)

११४. 'भवत्' शब्द स्त्री लिंग (आप)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
भवती	भवत्यौ	भवत्यः	प्रथमा
भवतीम्	भवत्यौ	भवतीः	द्वितीया

(इत्यादि नदी के समान)

११५. 'भवत्' शब्द नपुंसक लिंग (आप)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
भवत्	भवती	भवन्ति	प्रथमा
भवत्	"	"	द्वितीया

(इत्यादि 'जगत्' ७१ के समान)

११६. सकारान्त 'विद्वस्' (स्त्रीलिंग में)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
विदुषी	विदुष्यौ	विदुष्यः	प्रथमा
विदुषीम्	"	विदुषीः	द्वितीया

(इत्यादि नदी शब्द के समान)

११७. सकारान्त 'विद्वस्' शब्द (नपुंसक लिंग में)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	विभक्ति
विद्वद्	विदुषी	विद्वांसि	प्रथमा
"	"	"	द्वितीया

(शेष पुँल्लिङ्ग के समान)

(महत्, विद्वस् शब्दों के पुंल्लिङ्ग में रूप ३५,५० में देखो)

(ग) सर्वनाम शब्द तथा संख्यावाची शब्द भी विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं। इन के तीनों लिंगों में रूप अपने अपने प्रकरणों में दे दिये गए हैं।

नोट—शेष अजन्त या हलन्त गुणवाची शब्दों के रूप निर्माण विधि के सम्बन्ध में देखो द्वितीय खण्ड।

क्रिया विशेषण

नियम—संस्कृत में क्रियाविशेषण के साथ द्वितीया का एक वचन प्रयुक्त होता है और उसका लिङ्ग नपुंसक होता है। यथा—स मधुरं गायति। कहीं २ नपुंसक लिङ्ग की तृतीया विभक्ति का एक वचन भी प्रयुक्त होता है। यथा—सुखेन वसति। अत एव उपर्युक्त शैली से क्रिया-विशेषण के भी रूप बनाये जा सकते हैं।

प्रश्नमाला

अजन्त-प्रकरण

(१) निम्न शब्दों के लिङ्ग बताओ तथा सब विभक्तियों में रूप लिखो—

हरि, पति, मति, सखि। स्त्री, नदी। मधु, साधु, वधू। पितृ, मातृ, भ्रातृ। गो, नौ।

उक्त शब्द अजन्त हैं या हलन्त।

(२) निम्न लिखित रूप किस शब्द के किस विभक्ति तथा वचन में बनते हैं। तालिका बनाकर दिखाओ।

बालकौ, सखायौ, मुनौ, भानौ। नदीः, लक्ष्मीः। साधुः पितुः, पत्युः, कर्तुः। लताम, मत्याम्, गवाम्। गौः—गोः—गाः। पुरुषैः, नद्यै, लतायै। वने, साधवे, राये, हरे, धेनवे, लते। वारि, नदि,। नदी, मधुनी, मुनी, मती।

पद	मूल शब्द	विभक्ति	वचन
बालकौ	बालक	१मा, २ या	द्विवचन
....	....	....	....

इत्यादि।

(३) निम्न लिखित शब्दों के निर्दिष्ट विभक्ति में रूप लिखो—

प्रथमा में—सखि, नदी, पितृ, धातृ, रै।

द्वितीया में—गो, नदी, वन, स्त्री, स्वसृ।

तृतीया में — रै, हरि, बालक, नौ, शाला।
चतुर्थी में—लता, मधु, वारि, धेनु।
पञ्चमी में—धातृ, दधि, लता, भू।
षष्ठी में — मति, पति, भूपति, स्त्री, धेनु।
सप्तमी में—मुनि, दधि, वधू, रुचि, भानु।
सम्बोधन में—वारि, नदी, लता, अम्बा, मधु।

(४) निम्न लिखित रूपों में भेद बताओ।

वनं—वन । गिरिः-गिरौ-गिरेः । नद्यः-नद्या-नद्याः। वारिणी-वारीणि। धेनो-धेनोः-धेनौ। पिता-पितः। मात्रा-मात्रे। हरयोः-हर्योः-हरौ। बालके-बालकौ। मुने-मुनेः- मुनौ। भानुः-भानू। धेन्वा-धेन्वाः-धेनवः। पते-पत्ये। भुवः—भुवा—भुवाः। स्त्रियः—स्त्रिया— स्त्रियाः। मतिः—मती— मतीः।

(५) निम्न लिखित रूप किस २ विभक्ति में बनते हैं। बालकाभ्याम्। बालकयोः। भानोः। ग्लावः। लते। धियः। भुवाम्। वारिणः। लतायाः। रायः। पितुः। विधौ। सख्योः। मतेः। दध्नः। धात्रोः।

(६) निम्न लिखित रूपों को शुद्ध करो —
पितारौ, हे प्रभुः, पतिना, मतिना, गावम्, रैभिः, गावि, मातॄन्, फलान्, वारये, मधवे, दधिना, दधौ, वारिणाम्, हे मुनि, लक्ष्मीः मातासु, भूपत्युः, दधिः, वस्तुम्।

(७) निम्न शब्दों के लिङ्ग बताओ तथा इनके रूप किस शब्द के समान बनेंगे। इनके रूप लिखो।

गिरि, भूपति, पुस्तक, शाला, सागर, असि, अतिथि, वायु, विधु; कर्तृ, माला, गति, रात्रि, रजनी, अस्थि, अश्रु, रज्जु, चमू, दुहितृ, नेत्र, मित्र, वस्तु।

हलन्त प्रकरण

(१) निम्न शब्दों के लिङ्ग बताओ तथा सब विभक्तियों में रूप लिखो—

भिषज्, वाच्, मरुत्, स्रज्, अनडुह्, राजन्, नामन्, पथिन्, श्वन्, युवन्, शशिन्, चन्द्रमस्, पुंस्, पुर्, अहन्, आशिष्, धनुष्, मनस्, दिश्।

(२) निम्न लिखित रूप किस शब्द के किस विभक्ति तथा वचन में बनते हैं। तालिका बनाकर दिखाओ।

मरुति, दिशि, पयोमुचि, अह्नी, धनुषी, नामनी, शशी, नामनि, मनोहारि। अह्ने, नाम्ने, धनुषे, जगते, गिरे। दिवा, वाचा, अनडुहा, पुंसा, पथा। मघोनोः, तक्ष्णोः, विशोः, यूनोः। महान्तौ, पन्थानौ, अनड्वाहौ, द्यौः।

(३) निम्न शब्दों के निर्दिष्ट विभक्ति में रूप लिखो।

प्रथमा में—स्रमाज्, शशिन्, अहन्, अनडुह्, स्रज् त्विप्।

द्वितीया में—विद्वस्, पथिन्, धीमत्। ददत्, पुंस्। अनडुह्।

तृतीया में—नामन्, युवन्, श्वन्, पथिन्, राजन्, जगत्।

चतुर्थी में—जगत्, कर्मन्, शशिन्, भिषज्, पथिन्।

पञ्चमी में—युवन्, श्वन्ः मघवन्, गच्छत्, वाच्।

षष्ठी में—मनस्, हविष्, तक्षन्, अहन्, विश्, धीमत्।

सप्तमी में—गिर्, अहन्, नामन्, राजन्, मघवन्, विश् ।
सम्बोधन में—विश्, राजन्, चन्द्रमस्, मघवन्, शशिन्, गिर्, आशिष्, उपानह् ।

(४) निम्न लिखित रूपों में भेद करो ।

मरुतः—मरुता-मरुति-मरुते-मरुतोः-मरुतौ । पथः-पथा-पथि-पथे-पथोः । राज्ञः-राज्ञा-राज्ञे-राज्ञोः । चन्द्रमः-चन्द्रमाः-चन्द्रमसा-चन्द्रमसे । अहनी-अहनि । अहनि-अह्नी-अह्ने-अह्नः । हविषी-हविषि । धनुषी-धनुषि-धनूंषि । गिरः-गिरा-गिरे-गिरोः ।

(५) निम्न लिखित शब्दोंको शुद्ध करो—

पथेन, राजस्य, चन्द्रमस्य, मनेन, नामैः, जगतस्य, कर्मेषु, कर्म्मम्, मने, आपदात्ः, विद्वानैः, पथे, मरुतः (१ मा), वाचिषु, सम्राज्भ्याम्, सम्राजस्य, दिवस्य, भूभृतस्य, स्रजेन, पुंसान्, विद्वानस्य, विद्वसा, अनड्वाहेन, राजेन, शुनस्य, सुहृदस्य ।

(६) निम्न शब्दों के रूप किस शब्द के समान बनेंगे । लिङ्ग बताते हुए रूप बनाओ ।

तादृश् (पु०), वेधस्, धनिन्, वलिन, बुद्धिमत्, यावत्, (पु-) पठत् (पु-), अध्वन्, महिमत्, धुर्, प्रावृष्, वलवत् (न-), ज्योतिष्, आयुष्, शिरस् ।

(७) निम्न शब्दों में क्या विशेष परिवर्तन होता है और किस २ विभक्ति में ?—

विद्वस्, राजन्, युवन्, मधवन्, श्वन्, पथिन्, नामन्, अनड्डह्, अहन् ।

(८) निम्न शब्दों के निर्दिष्ट विभक्तियों के एक वचन में रूप लिखो—

शब्द —	तृतीया	चतुर्थी	पञ्चमी	षष्ठी	सप्तमी
मरुत् —	मरुता	मरुते	मरुतः	मरुतः	मरुति
वाच् —	...	...	...	...	...
धनुष् —	...	...	...	...	...
मनस् —	...	...	...	...	...
जगत् —	...	...	...	...	...
भवत् —	...	...	...	...	...
कर्मन् —	...	...	...	...	...
उष्णिह्—	...	...	...	...	...
गिर् —	...	...	...	...	...
दिश् —	...		...	...	...

(उक्त शब्दों के साथ प्रत्यय लगाने पर कोई परिवर्तन नहीं होता)

(६) क्या निम्न शब्दों के रूपों में भिन्नता है। यदि है तो कहां ?

(क) चकारान्त, जकारान्त, तकारान्त, दकारान्त तथा षकारान्त शब्दों का पुँल्लिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग में।

(ख) स्रज्-सम्राज्। दृश्-विश्। ददत्-गच्छत्। आत्मन्-राजन्। दृश्-दिश। उष्णिह्-उपानह्।

(ग) निम्न शब्दों का प्रथमा और सम्बोधन में—धनुष्, मनस्, अहन्, नामन्, उपानह्, गिर्, ककुप्, अनडुह्, विश्, श्वन्, शशिन्, राजन्, मघवन्, धीमत्, भिषज्।

सर्वनाम व संख्यावाची प्रकरण

(१) सर्वनाम शब्द कौन २ से हैं।

ख – निम्न शब्दों के तीनों लिङ्गों में रूप लिखो—

सर्व, यद्, किम्, तद्, युष्मद्, अस्मद्, कति।

(२) अकारान्त सर्वनाम शब्दों तथा अन्य अकारान्तों (बालक आदि) में किन २ विभक्तियों में भेद होता है और क्या भेद होता है। साथ २ रूप लिख कर दिखाओ।

(३) निम्न शब्द किन २ विभक्तियों में बनते हैं। ये शब्द तीनों लिंगों में से लिये गये हैं।

सर्वे, सर्वाः, सर्वस्याः, सर्वम्। तस्यै, तत्, ते, ताः, तयोः। ये, यानि, याभ्याम्, यस्मात्। नौ, वाम्, ते, मे। इमे, एनयोः, इमाः।

(४) निम्न शब्दों के स्त्रीलिङ्ग व नपुंसक लिंग के रूप लिखो।

शब्द	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसक लिंग
कम्			
कस्मै			
तस्य			
केन			
कान्			
सर्वौ			
यस्मात्			
मयि			

७६+७=८६

५ (क) किन-किन संख्यावाची शब्दों के तीनों लिङ्गों में एक समान तथा किन-किन के विभिन्न रूप बनते हैं।

ख–निम्न शब्दों के तीनों लिंगों में नाम लिखो—

कति, द्वि, त्रि, चतुर्, सप्तन्, दशन्।

ग–क्या संख्यावाची शब्दों के रूप तीनों वचनों में बनते हैं ? नियम बताओ।

घ–संख्यावाची शब्दों से भिन्न और किस शब्द के केवल एक ही वचन में रूप बनते हैं।

६ किन्हीं तीन २ सर्वनाम तथा संख्यावाची शब्दों के सम्बोधन में रूप लिखो।

७ निम्न विशेषणों के रूप लिखो—

गुरु (न०), शुचि (पु०), मृदु (स्त्री), पीत (न०) बहु (पु०), दातृ (स्त्री), पाण्डु (न०)।

प्रथम खण्ड समाप्त

शुद्धयशुद्धि पत्रम्

अशुद्धि	शुद्धि	पृष्ठ
ङः	ङेः	६
बालकाल्	बालकात्	८
मातृ	भ्रातृ	१२
अजादि स्त्रीलिङ्ग	अजन्त०	१४
म्रत्याः	मत्याः	१५
–धियौ	–धियि	१७
सुहृदम्	सुहृदौ	३०
आत्मनौ	आत्मानौ	३१
मघनौ	मघवानौ	३३
युवन्तौ	युवानौ	३३
हे विद्वान्	हे विद्वन्	३६
सम् (नोट)	सम	५५
सार्वो	सर्वा	५५
अस्मिन	अस्मिन्	५८
त्वा	त्वम्	६२
एकस्य (स्त्री)	एकस्यै	६४
षड्भ्य	षड्भ्यः	६७

स्वाध्याय के लिए चुनी हुई पुस्तकें

वैदिक साहित्य

वैदिक विनय १, २, ३ भाग	श्री अभय	२॥), २॥), २॥)
वैदिक ब्रह्मचर्य-गीत	श्री अभय	२)
ब्राह्मण की गौ	श्री अभय	॥)
वैदिक अध्यात्म विद्या	श्री भगवद्दत्त	१।)
वैदिक स्वप्न-विज्ञान	श्री भगवद्दत्त	२)
वेद गीताञ्जली [वैदिक गीतियां]	श्री वेदव्रत	२)
वैदिक सूक्तियां	श्री रामनाथ	१॥)
वरुण की नौका [दो भाग]	श्री प्रियव्रत	६)
सोम-सरोवर, सजिल्द, अजिल्द	श्री चमूपति	२), १॥)
अथर्ववेदीय मन्त्र-विद्या	श्री प्रियरत्न	१॥)

धार्मिक साहित्य

सन्ध्या रहस्य	श्री विश्वनाथ	२)
धर्मोपदेश १, २, ३	श्री स्वामी श्रद्धानन्द	१।), १), १॥)
आत्ममीमांसा	श्री नन्दलाल	२)
प्रार्थनावली [प्रेरणा देने वाली प्रार्थनाएं व गीतियां]		।)
आर्यसमाज और विचार-संसार	श्री चमूपति	।)
कविता मञ्जरी		।-)
कविता कुसुमाञ्जली		।)

पता—प्रकाशन मन्दिर, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

संशोधित पञ्चतन्त्रम्

प्रथम खण्डे (मित्रभेदः, मित्रसम्प्राप्तिः)

द्वितीय खण्डे (अवशिष्टं तन्त्रत्रयम्)

पञ्चतन्त्रं हि संस्कृतसाहित्यान्तर्गतकथाकाव्ये नीतिव्यवहारोपयोगि सुप्रसिद्धं ग्रन्थम्। तदेव "संशोधित पञ्चतन्त्र" मिति नाम्ना अक्षोलदुरूहांशवर्ज टिप्पण्यादि संवलितं छात्राणामुपयोगाय प्रकाशितम्।

संस्कृत के अन्य प्रकाशन